सम्पादक
डॉ. हारून रशीद सिद्दीकी
सहायक
मु. गुफ़रान नदवी
मु. हसन अन्सारी
हबीबुल्लाह आज़मी

कार्यालय
मासिक सच्चा राही
मजलिसे सहाफ़त व नशरियात
पो0 बॉ0 नं0 93
टैगोर मार्ग, नदवतुल उलमा, लखनऊ
फोन : 0522–2740406
: 0522–2741221
E-mail :
nadwa@sancharnet.in

सहयोग राशि

एक प्रति	रु0 12e-
वार्षिक	रु0 120e-
विशेष वार्षिक	रु0 500e-
विदेश में (वार्षिक)	30 यूएस डालर

चेक/ड्राफ्ट पर यह लिखें

"सच्चा राही"

पता

सेक्रेटरी, मजलिसे सहाफ़त व नशरियात
नदवतुल उलमा, लखनऊ, 226007

मुद्रक एवं प्रकाशक अतहर हुसैन द्वारा काकोरी आफसेट प्रेस से मुद्रित एवं दफ्तर मजलिसे सहाफ़त व नशरियात नदवतुल उलमा, लखनऊ से प्रकाशित।

Visoin Computers- 9838644687

हिन्दी मासिक
सच्चा राही
सामाजिक एवं साहित्यिक लखनऊ

जून, 2009 वर्ष 8 अंक 3

पयामे इन्सानियत

"सजन्नों! आइये हम संकल्प लें कि किसी के मज़हब को बुरा नहीं कहेंगे, किसी के कलचर को बुरा नहीं कहेंगे, किसी की भाषा पर कटाक्ष नहीं करेंगे, और सुख में तो सब काम आते हैं, हम दूसरों के दुःख में काम आयेंगे।"

(अनीस चिश्ती, महासचिव
पयामे इन्सानियत अभियान)

आपके पते के साथ जो खरीदारी नम्बर है अगर उसके नीचे लाल या काली लाइन है तो समझें कि आपका सालाना चन्दा खत्म हो चुका है। अतः आप जल्द ही अपना चन्दा भेजने का कष्ट करें। और मनीआर्डर कूपन पर अपना खरीदारी नम्बर अवश्य लिखें। अगर आपका फोन या मोबाइल हो तो उसका नम्बर भी लिखें।

विषय एक दृष्टि में

रसूल स0 का आज्ञाकारी ही सफल है	डा0 हारून रशीद सिद्दीकी	3
कुर्आन की शिक्षा	मौ0 मु0 मंजूर नोमानी	5
प्यारे नबी की प्यारी बातें	अमतुल्लाह तस्नीम	8
मुसलमानों के आपसी हुकूक	अल्लामा सैयद सुलैमान नदवी रह0	10
जग नायक	मौ0 स0 म0 राबे हसनी	13
दीन की बातें	इदारा	15
यौमे आख़िरत का दूसरा मरहला	मौलाना मुजीबुल्लाह नदवी	16
ग्रीष्म ऋतु	डा0 हारून रशीद सिद्दीकी	19
जल ही जीवन है	एम0 हसन अंसारी	21
आप के प्रश्नों के उत्तर	इदारा	22
लिखने की कला	शमीम इक्बाल खाँ	24
समय का पालन कीजिए	अन्जुम सालेहा	27
जरूरियाते दीन आप कैसे पढ़ाएं	डा0 हारून रशीद	29
शहीदे अक्सा शैख़ अहमद यासीन	नजमुस्साकिब अब्बासी	30
भारत का संक्षिप्त इतिहास	इदारा	32
हमारी जिम्मेदारी	नज़रुल हफीज़	36
हिन्दी लिपि में उर्दू शब्दों का उच्चारण	इदारा	39
अतर्राष्ट्रीय समाचार	डॉ0 मुईद अशरफ	40

रसूल (सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम) का आज्ञाकारी ही सफल है

डा० हारून रशीद सिद्दीकी

रसूल की इताअ़त अल्लाह की इताअ़त है "मय्युति-अिर्रसूल फ़क़द् अताअ़ल्लाह" जिस ने रसूल की इताअ़त की उस ने अल्लाह की इताअ़त की। (अन्निसा : 80) इस लिये कि अल्लाह ने अपना आज्ञा कारी बनाने के लिये तथा अपने आज्ञा पालन के लिये ही अपने नबियों तथा रसूलों को भेजा और सब अन्त पर अपने अन्तिम नबी ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम) को भेज कर फ़रमाया "और जिस ने अल्लाह और उस के रसूल का आज्ञा पालन किया वह बड़ी सफलता के साथ सफल हुआ।"

(अह़ज़ाब : 71)

कुछ लोग सफलता इसे कहते हैं कि जब किसी से मुक़ाबला हो तो विजय पाए जब कि यह कसौटी उचित नहीं है, यदि इस कसौटी को शुद्ध मान लें तो मानना पड़े गा कि ह़ज़रत हुसैन (रज़ि0) करबला क्षेत्र में असफल रहे, जब कि सभी का मनना है कि वह सफल रहे, ह़ज़रत अ़ली रज़ियल्लाहु अ़न्हु पर तलवार का वार होता है और उसी से वह शहीद हो जाते हैं परन्तु वार पड़ते ही आप की जबान से निकलता है "फ़ुज़्तु व बिरब्बिल्कअ़बः" कअ़बा के रब की क़सम मैं सफल हो गया। अबू जह्ल ने ह़ज़रते सुमय्यः (रज़ि0) को बर्छा मार कर शहीद किया सफलता किस को मिली? ह़ज़रते सुमय्या को, "बिअ़रे मऊ़ना" की घटना में बनी सुलैम के क़बीले उसय्यः, रअ़ल और ज़कवान के लोगों ने 69 सहाबा (रज़ि0) को शहीद कर दिया, सफलता किस को मिली? उन शहीदों को जिन को सदैव का सफल जीवन मिल गया, असफल कौन रहा? वही जिन को अल्लाह के रसूल (सल्लल्लाहु अ़लैहि व स़ल्लम) ने अपनी नमाज़ों में शाप दिये और जिन के लिये जहन्नम का फैसला हुआ। उहुद की लड़ाई में 70 सहाबा (रज़ि0) शहीद हुए स्वयं अल्लाह के नबी घायल हुए, सफल कौन रहा? जिन के लिये अल्लाह ने फ़रमाया "व अन्तुमुल् अअ़्लौन इन् कुन्तुम् मुअ़मिनीन" और तुम ही उच्चतम रहोगे यदि तुम मुअ़मिन हो।

(आलि इ़म्रान : 139)

अतः सफलता की कसौटी माल व दौलत हो, यह शुद्ध नहीं है न राज पाट ही सफलता का चिन्ह है वरना क़ारून को सफल कहना पड़ेगा, सफलता ऊची नौकरी मिलना भी नहीं है। सफलता अत्यधिक माल कमा लेना भी नहीं, अच्छे स्वास्थ्य, सुन्दरता, अल्लाह के पुरस्कार हैं परन्तु केवल इन का मिल जाना भी सफलता नहीं है। वास्तव में सफल वही है जिस को ईमान की दौलत मिल गई जिस ने ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम) को अल्लाह का आन्तिम रसूल मान लिया और उन के लाए हुए क़ुर्आन के अनुसार कह दिया मेरा रब अल्लाह है फिर उस से डिगा नहीं "जिन लोगों ने दिल से मान लिया कि हमारा रब अल्लाह है, फिर उस पर ज़मे रहे उन पर फ़िरिश्ते उतरेंगे (और कहेंगे) तुम चिन्ता न करो, दुखी मत हो और तुम जन्नत पाने की शुभ सूचना लो, जिस का तुम से (पैग़म्बरों द्वारा) बचन दिया जाता रहा था "(41:30) वास्तव में जन्नत पा लेना ही सफलता है। पस जो जहन्नम से बचा दिया गया और जन्नत में दाख़िल कर दिया गया वही तो सफल है।"

(आलि इम्रान : 185)

अतः यदि हम उच्चता तथा सफलता की कसौटी ईमान और उस पर जमे रहने को मानें यही वासतविक कसौटी है तो हम को हज़रते बिलाल चिलचिलाती रेत पर घसीटे जाने और सीने पर भारी पत्थर रख दिये जाने पर भी उच्च तथा सफल दिखते हैं, हज़रते खब्बाब दहकते कोयले पर भूने जाने पर भी उच्च तथा सफल दिखते हैं। अतः आज भी कहीं के अत्याचारी मुसलमानों को सताते हैं, उन को घर से बे घर कर देते है, उन के घर तथा सम्पति में आग लगा देते हैं, उन के पेट चाक कर देते हैं, उनके सामने उनके बच्चों का बध कर देते हैं तो वह असफल नहीं है जब कि वह ईमान वाले हों मूलवस्तु (अस्ल चीज़) ईमान है परन्तु यदि वह ईमान से खाली थे और उन के साथ यह घटनाएं घटी तो अवश्य वह "खाविरद्दुन्या वल आखिरति" इस जगत में भी हानि में रहे तथा आने वाली आख़िरत के शाश्वत जीवन में भी हानि में रहेंगे अतः हम को इस ओर अत्यधिक ध्यान देना चाहिये कि हमारा हर भाई ईगान में पक्का रहे तथा हम को अपने हर भाई को यह बता देना चाहिये कि चाहे तुम क़त्ल कर दिये जाओ, आग में जला दिये जाओं परन्तु ईमान से न डिगो कि सफलता इसी में है। एक फारसी कवि कहता है : –

मुवहिहद चे बर पाए रेज़ी ज़रश
चें फ़ौलादे हिन्दी निही बर सरश
उम्मीदो हिरासश न बाशद ज़े कस
हमीनस्त बुन्यादे तोहीद व बस।

एकेश्वर वादी के पगों पर चाहे सोना चान्दी ढेर कर दिया जाए और चाहे उस के सिर पर भारतीय तलवार रख दी जाए, न तो वह चान्दी सोने के लालच में आकर एकेश्वर वाद से डिगे गा, ना ही तलवार के भय से, यही एकेश्वरवाद का मूल आधार है।

यह भी याद रखने की बात है कि अल्लाह व रसूल के आज्ञाकारी की परीक्षा भी अवश्य होती है, अल्लाह ने घोषित किया कि "हम तुम को अवश्य जाचेंगे, कुछ भय से, भूख से, जान, माल तथा फलों की हानि से (फिर कहा) शुभ सूचना दे दो (इन परीक्षाओं में ईगान पर) जमे रहने वालों को जो किसी भी आपत्ति आने पर कह उठते हैं कि हग तो अल्लाह ही के हैं और उसी की ओर लौट कर जाने वाले हैं। (अलबकरह : 155,156) दूसरी जगह फ़रमाया "क्या लोगों ने समझ रखा है कि वह कहेंगे हग ईमान लाए बस छोड़ दिये जाएंगे और वह जांचे न जाएंगे। (अल–अनकबूत : 2) इन क़ुर्आनी आयात से ज्ञात हुआ कि ईमान वाला परखा अवश्य जाता है।

इस का यह अर्थ कदापि नहीं कि एक ईमान वाला धनवान नहीं हो सकता नहीं नहीं हज़रत उसमान, हज़रत अब्दुर्रहमान बिन औफ़ जैसों का व्यक्तिगत धन देख लो। किसी फ़ारसी वाले त्यागी ने कहा :–

न मर्द आनस्त कि दुन्या दोस्त दारद
(वह मर्द नहीं है जो धन दौलत को दोस्त रखता है) तो किसी ज्ञानी ने उत्तर दिया :–

अगर दारद बराये दोस्त दारद
(अगर धन रखता है तो दोस्त के लिये रखता है।) कुछ लोग हैं जिन को (संसार का) कोई क्रय, कोई विक्रय अल्लाह की याद, नमाज, काइम करने तथा ज़कात अदा करने से अचेत नहीं कर सकते वह उस दिन से डरते रहते है जिस दिन (अवज्ञा काररियों के) बहुत से दिल पलट जाएंगे, और आँखें उलट जाएंगी।

(अन्नूर : 37)

अतः हम अमीर रहें, गरीब रहें, स्वस्थ रहें, रोगी रहें, राजा रहें, प्रजा रहें, हाकिम रहें महकूम रहें हर दशा में हग अल्लाह और उस के रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) के आज्ञाकारी रहें तभी हम सफलता प्राप्त कर सकेंगे। हम उन अवज्ञाकारियों के धन, समृद्धि, भोग विलास को ललचाते नहीं जिन से कहा जाएगा " तुम अपने सांसारिक जीवन में अपने भाग के भोग विलास के आनन्द प्राप्त कर चुके और उन से खूब लाभ पा चुके आज तुम संसार में नाहक़ घमन्ड करने तथा पाप करने के बदले में तिरस्कृत करने वाली यातनाएं भोगो। (अहक़ाफ़ : 40)

❑❑

कुरआन की शिक्षा

मौलाना मु0 मंजूर नोमानी

तर्जमा :– और ईमान वालों को चाहिये कि (जिस से उन के हक़ में कोई ज़ियादती और अपराध हो जाये उस को) वे मुआफ़ और नज़र अन्दाज कर दिया करें। क्या तुम यह नहीं चाहते कि अल्लाह तुम्हें मुआफ़ कर दे। और अल्लाह बख़्शने वाला और बहुत मेहरबान है।

(अन्नूर : 22)

मतलब यह हुआ कि जो बन्दा यह चाहे और इस की तमन्ना और आरजू रखे कि अल्लाह तआला उस के साथ मेहरबानी और बख़्शिश का मुआमला करें उसे चाहिये कि वह अपने कुसूरवारों के साथ मेहरबानी का मुआमला करे। और उन को मुआफ़ कर दिया करे। अगर वह ऐसा करेगा तो अल्लाह तआला भी उस के साथ बख़्शिश और रहमत का मुआमला फ़र्मायेगा। और अल्लाह तआला की बख़्शिश व रहमत उस की आला शान के मुताबिक होगी। फिर तर्गीब का एक दूसरा पहलू इस आयत में यह भी है कि अल्लाह तआला जिस तर्ज़े– अमल (परंपरा) का हम को हुक्म दे रहा है वह फर्माता है कि खुद मेरा भी वही तर्ज़े– अमल है। मैं अपने गुनाहगार बन्दों को बख़्शने वाला और उन पर रहम करने वाला हूँ। तुम भी अपने कुसूरवार भाइयों के कुसूर मुआफ़ कर दिया करो। इस तरह मेरा सिफ़ाती कुर्ब (गुणात्मक संपर्क) हासिल कर के मेरे रंग में रंग जाओ।

कुरआन पर और कुरआन के नाज़िल फ़र्माने वाले रब्बे–रहीम पर ईमान रखने वाला कौन बन्दा होगा जो इस पयामे रहमत से प्रभावित न हो।

करीब–करीब यही मज़मून सूरए–तग़ाबुन में इन शब्दों में इर्शाद फर्माया गया है :–

तर्जमा :– और अगर तुम दरगुज़र किया करो और नजर अन्दाज कर दिया करो और मुआफ़ी दे दिया करो तो अल्लाह भी बहुत बख़्शने वाला और बड़ा मेहरबान है।

(तग़ाबुन : 14)

यहाँ तक जो आयतें लिखी गयीं वे ख़िताबे–आम (सामान्य संबोधन) से संबंध रखने वाली थीं। अब एक आयात सूरए–अअ्राफ़ के आखिरी रूकूअ् की पढ़िये जिस में ख़ास तौर से रसुलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को मुखातब (संबोधित) कर के फर्माया गया है :–

तर्जमा :– (लोगों की बेहूदा–अनुचित बातों और जाहिलाना हर्कतों से) आप दर गुजर करने और मुआफ कर देने की परंपरा इख्तियार कीजिये और नेक कामों के लिये कहते रहिये, और उन जाहिलों नासमझों (की जाहिलाना बातों) का कुछ खियाल न कीजिये, और कोई असर न लीजिये।

(अअ़राफ : 199)

और सूरए–क़सस में अल्लाह के ख़ास फ़ज़्लो–इनाम के मुस्तहक़ (पात्र) अहले–ईमान के औसाफ़ व अख़्लाक का बयान करते हुये उन की एक ख़ास सिफ़त यह बयान फर्मायी गयी है :–

तर्जमा :– और जब वे सुनते हैं (जाहिलों औबाशों से) कोई बेहूदा (अनुचित) बात तो उस को नज़र अन्दाज़ कर देते हैं कि भाई! हमें अपने किये का बदला मिलेगा और तुम को तुम्हारे किये का। बस हमारा सलाम लो, हम जाहिलों से उलझना नहीं चाहते।

(क़सस : 55)

इसी तरह सूरए–फुर्क़ान में भी अल्लाह के ख़ास मक़्बूल बन्दों की यह सिफत बयान की गयी है :–

तर्जमा :– और जब जाहिल लोग उन से जिहालत की बातें करते हैं तो वे (उन से उलझते नहीं, बल्कि) कहते हैं, बस भाई! हमारा सलाम! (फुर्क़ान : 63)

अगर कुर्आन–मजीद की इस त़ालीम व तल्क़ीन पर अ़मल किया जाये तो दुन्या के कितने झगड़े–फ़साद ख़त्म हो जायें, और दुन्या के बाग़ में अमन व सुकून और प्यार व मुहब्बत की कैसी बहार आजाये।

हाँ एक बात यहाँ गौर करने की है। और वह यह कि अफ़्व दरगुजर की इस कुरआनी तालीम का संबंध जाती और निजी मुआमलों व हकों से है, जैसे अगर कोई आदमी मेरी जात को दुःख पहुँचाता है और मेरा ही कुसूरवार है, तो मेरे लिये उचित यही है कि मैं उस को मुआफ कर दूँ। कुरआने–मजीद की तालीम व तर्गीब मेरे लिये यही है। लेकिन अगर कोई फ़िरका या गिरोह दुन्या में फसाद पैदा करता या गुमराही फैलाता है, या अल्लाह की मुकर्रर की हुयी हदों (सीमा) को तोड़ता है और इस तरह फ़ज़ा (वातावरण) को ख़राब करता है तो वह हरगिज़ इस सहन शीलता का पात्र नहीं है। और उस के साथ नरमी और दरगुजर का बर्ताव करने में अल्लाह की मखलूक की और अल्लाह के मुकर्रर किये हुये कानून की हकतलफी होगी। इसलिये उस के शर–फ़साद को रोकने के लिये मुनासिब कार्रवाई करनी जरूरी होगी। कुरआने–अज़ीज़ में जहाँ–जहाँ विभिन्न प्रकार के अपराधियों के हक में सख्ती बरतने का हुक्म दिया गया है वे ऐसे ही मौके के लिये है। इस फ़र्क (भेद) को हमेशा ध्यान में रखना चाहिये।

जुर्अत व शुजाअत

कुरआने करीम जिस तरह तवाज़ो व नम्रता और दरगुज़र व सहन शीलता की तालीम देता है इसी तरह वह अपने मौके पर बहादुरी और जाँबाज़ी और जुर्अत व ताक़त को प्रकट करने की भी तलक़ीन करता है। जैसे, अगर हक़ व बातिल (असत्य) का मारका (युद्ध) हो तो कुर्आने–मजीद अपने मानने वालों को हुक्म देता है कि वे फ़ौलादी इन्सानों की तरह पूरी बहादुरी और साबित–क़दमी (अचल–पगों) के साथ जंग करें। एक मौक़े पर इर्शाद है :–

तर्जमा :– ए ईमान वालो! जब तुम्हारा मुक़ाबला (दुश्मन की) किसी फ़ौज से हो तो तुम साबित–कदम रहो। (अन्फ़ाल : 45)

एक दूसरे मौक़े पर इर्शाद फ़र्माया गया :–

तर्जमा :– अल्लाह तआला अपने उन बन्दों से मुहब्बत करता है जो उस की राह में सफ़ बाँध कर और ऐसे जम कर जंग करते हैं कि मानो वे सीसा पिलायी हुयी दीवार है। (सफ़ : 4)

एक और मौक़े पर रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के सहाब–ए–किराम (सम्मानित साथी) की उस ईमानी ताक़त और शुजाअत का ज़िक्र, ख़ास प्यार व प्रशंसा के अन्दाज़ में किया गया है कि जब उन को डराने और भीत करने के लिये ये ख़बरें पहुँचाई गयीं कि तुम्हारे दुश्मानों ने तुम्हें ख़त्म करने के लिये बड़ी तैयारियाँ की हैं और जंग का बहुत सामान जमा किया है तो वे बिल्कुल भयभीत नहीं हुये बल्कि इस से उन की ईमानी–कुव्वत में और तरक्की हुयी और उन्हों ने कहा कि (हमें हमारा अल्लाह काफ़ी है) हम सब देख लेंगे।

सूरए–आलि–अिम्रान में इर्शाद है :–

तर्जमा :– हमारे वह ईमान वाले बन्दे जिन से लोगों ने कहा कि (तुम्हारे मिटाने के लिये) सारे लोग जमा हुये हैं और उन्हों ने बड़ा सामान जमा किया है तुम को इन से डरना चाहिये। तो इस बात ने उन की ईमानी कैफियत में और इजाफ़ा किया और उन्हों ने कहा हमें अल्लाह काफ़ी है और वह अच्छा कारसाज़ है। (आलि–अिम्रान : 173)

इसी तरह ग़ज़्व–ए–अहज़ाब (अहज़ाब की लड़ाई) में दुश्मनों की असंख्य फौजों को देखने के बाद ईमान वालों ने जिस ईमानी जुर्अत व हिम्मत और शुजाअत का सुबूत दिया था, उस का ज़िक्र भी कुर्आने–पाक में बड़े तारीफ़ी अन्दाज़ में किया गया है। इर्शाद हुआ है :–

तर्जमा :– और जब देखा ईमान वालों ने दुश्मन की फौजों को, तो उन की ज़बान से निकला, यह तो वही है जिस की हम को अल्लाह व रसूल ने पहले से ख़बर दी थी। और बेशक सच फ़र्माया था अल्लाह व रसूल ने। और इस से उन के ईमान व यक़ीन में और उन की इताअत की सिफ़त में और तरक्की हुयी। (अहज़ाब : 22)

इस सिल्सिले में एक बात यह भी समझने की है कि मौत

का ख़ौफ़ या किसी तकलीफ़ या नुकसान का डर ही वह चीज़ है जो जुर्अत व शुजाअ़त के रास्ते में रूकावट बनती है और आदमी को बुज़्दिल बना देती है। कुर्आने–मजीद ने बुज़्दिली की इस जड़ ही को काट दिया। जगह–जगह फ़र्माया गया है कि मौत का वक़्त मुकर्रर है अगर वह वक्त आ गया है तो कोई बचा नहीं सकता और अगर वह वक्त अभी नहीं आया है तो कोई मार नहीं सकता। इसी तरह जगह–जगह फर्माया गया है कि किसी तकलीफ़ या नुक़्सान का पहुँचना न पहुँचना अल्लाह तआ़ला की मशीयत और इरादे पर मौक़ूफ (अवलंबित) है। जब तक उस का इरादा और हुक्म न हो हमें कोई तकलीफ़ और नुक़सान किसी तरफ़ से नहीं पहुँच सकता और जब उस का हुक्म हो तो कोई हमें तक़्लीफ़ और नुक़्सान से बचा नहीं सकता। दो–तीन आयतें इस सिल्सिले में भी पढ़ लीजिये। सूरे–आलि–अ़िम्रान में इर्शाद फ़र्माया गया है :–

तर्जमा :– और किसी को मौत आ नहीं सकती खुदा के हुक्म के बगैर, लिखा जा चुका है निश्चित समय (मौत का)।

(आलि–अ़िम्रान : 145)

तर्जमा :– जब आयेगा वक़्त उन की मौत का तो न एक घड़ी पीछे रह सकेंगे और न आगे जा सकेंगे (ठीक निर्धारित समय पर उठा लिये जायेंगे)। (यूनुस : 49)

इसी तरह एक जगह फ़र्माया गया है :–

तर्जमा :– कोई मुसीबत नहीं आ सकती खुदा के हुक्म के बगैर।

(तगबुन : 11)

और सूरए–तौबा में इर्शाद है :–

तर्जमा :– ऐ रसूल (स0) आप फ़र्मा दीजिये कि हमें हरगिज कोई मुसीबत नहीं पहुँच सकती सिवाय उस के जो अ़ल्लाह ने हमारे लिये मुक़द्दर (भाग्य बद्ध) कर दिया है। वह हमारा मालिक है और ईमान वालों को सब काम उसी अल्लाह के सुपुर्द कर देने चाहियें।

(तौबा : 51)

गौर किया जाये, जिस दिल में यह तालीम उतर जाये फिर उस में बुजदिली के लिये कहाँ गुन्जाइश रह सकती हैं, और जुर्अत व शुंजाअत की राह में उस के लिये क्या रूकावट हो सकती है?

वक़ार व खुद्दारी

जुर्अत व शुजाअत से नज़दीक का संबंध रखने वाली एक अख्लाकी सिफ़त यह भी है जिसे हम अपनी जबान में वक़ार व खुद्दारी कहते हैं। कुर्आने मजीद अपने मानने वालों को इस की भी हिदायत करता है कि वह वक़ार (गभीरता) और खुद्दारी (स्वाभिमान) के साथ रहें। ऐसा रवैया न इखतियार करें कि लोगों की नज़रों में ज़लील व खार हों, यहाँ तक कि अगर किसी वक्त गरीबी और हालात की नासाजगारी से फ़क्र व फ़ाक़ा (भूका रहने) की भी नौबत आजाये तो भी अपने इस हाल को जहाँ तक हो सके दूसरों पर जाहिर न होने दें। ऐसे ही लोगों के बारे में सूरए–बक़्रह में एक जगह फ़र्माया गया है :–

तर्जमा :– ना समझ आदमी उन के सुवाल न करने की वजह से उन को मालदार समझे गा तुम पहचान सकते हो उन को उन के चेहरे की खास कैफ़ीयत से।

(अल बक़रह : 273)

और सूर–ए–फ़ुर्कान में जहां अल्लाह के खास मकबूल बन्दों के इम्तियाजी अखलाक व औसाफ का जिक्र किया गया है वहीं उन का एक वस्फ़ यह भी बयान फरमाया गया है :–

तर्जमा :– और ज़ब उन का गुजर होता है लोगों की बेहूदा बातों पर तो वह बावकार शरीफों की तरह गुजर जाते हैं। (फ़ुरकान : 72)

अलगरज़ अपने मानने वालों को कुर्आन मजीद की हिदायत है कि उन का रवैया ऐसा ही खुद्दारी और वक़ार का होना चाहिये।

❑❑

सैलानी की डायरी.....

हमें सोचना होगा, कि हम से कहाँ भूल हुई, चूक हुई, हमने गलती की, और गलत को सही ठहराया, कारक को कारण का पता चल जायेगा, और तब पुलिया गिरेगी नहीं बन जायेगी। और हम कामयाब होंगे। ईश्वर हमारी मदद करेगा। और तब मंगलपुर का अमंगल दूर होगा। है न ऐसा!!!

❑❑

प्यारे नबी की प्यारी बातें

अमतुल्लाह तसनीम

अमल न करने वालों को किस चीज़ का इन्तिजार है

हजरत अबू हुरैरः (र0) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह (स0) ने फरमाया, नेक अमल में सात चीजों से पहले जल्दी करो। क्या तुम ऐसे फक्र का इन्तिजार करते हो जो भुला देने वाला हो। या ऐसी दौलत का जो सरकश बना देने वाली हो। या ऐसे मर्ज का जो बिगाड़ देने वाला हो। या ऐसे बुढ़ापे का जो अक्ल खो देने वाला हो। या ऐसी मौत का जो अचानक आ जाने वाली हो। या दज्जाल का? पस बुरा गायब है जिसका इन्तिजार किया जाता है। या क़ियामत का, तो क़ियामत सख्त और तल्ख है।

(तिर्मिजी)

मौत को ज़ियादः याद करो

हजरत अबू हुरैरः (र0) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह (स0) ने फ़रमाया, लज्जतों को मिटा देनेवाली को ज़ियादः याद करो (यानी मौत को)।

(तिर्मिजी)

मौत और कियामत की याद

हजरत उबई (र0) बिन कअब (र0) से रिवायत है कि जब एक तिहाई रात गुजर जाती तो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम खड़े होते और फ़रमाते, लोगो! अल्लाह को याद करो। कपकपा देनेवाली आने वाली है। मौत अपने मुतअल्लिकात के साथ आ गयी। मौत अपने सामान के साथ आ गयी। मैंने अर्ज़ किया या रसूलल्लाह! मैं आपके लिए अक्सर दुआ करता हूँ। और मैं अपनी दुआ में कितना हिस्सा आपके लिए रखूँ? आपने फरमाया, जितना चाहो। मैंने कहा चौथाई? फरमाया, जितना चाहो। अगर इससे जियादः करो तो तुम्हारे लिए बेहतर है। मैंने कहा, आधा? फरमाया, जितना चाहो। अगर इससे जियादः करो तो तुम्हारे लियें बेहतर है। मैंने कहा, दो तिहाई? फरमाया, जो चाहो अगर इससे ज़ियादः करो तो तुम्हारे लिय बेहतर है। मैंने कहा, मैं सबका सब आपके लिए कर दूँ? फरमाया, तुम्हारी फिकरें दूर हो जायेंगी और तुम्हारे गुनाह बख्श दिये जायेंगे।

(तिर्मिजी)

मुसीबतों पर मौत की तमन्ना नही करना चाहिये जिन्दगी फायदे से खाली नहीं

हजरत अबू हुरैरः (र0) से रिवायत है कि रसूलुल्लाहु सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया, मौत की कोई भी आर्जू न करे। अगर वह नेक है तो मुमकिन है कि उम्र के इजाफः से उसकी नेकियों में इजाफः होता रहे। और अगर बुरा है तो शायद वह तौबः करके अल्लाह को राजी कर ले।

(बुखारी–मुस्लिम)

हजरत अबू हुरैरः (र0) से रिवायत है कि नबी (स0) ने फ़रमाया, कोई मौत की आर्जू न करे। और मौत से पहले मौत की दुआ न करे। इसलिए कि जब मर जायेगा तो उसके अमल मुन्क़तिअ हो जायेगे। और मोमिन की उम्र जितनी जियादः होगी भलाइयों में इजाफ़ा होता रहेगा।

मौत की दुआ का सही तरीका

हजरत अनस (र0) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया, मुसीबत के वक्त भी कोई मौत की तमन्ना न करे। अगर बेकहे चारा न हो तो कहे। अल्लाहुम्म अहयीनी मा कानतिल् ह्यातु खैरल्ली व तवफ़्फनी अिजा कानतिल् वफ़ात खैरल्ली।

(बुखारी–मुस्लिम)

मौत की दुआ की मुमानिअत

हजरत कैस बिन अबू हाजिम (र0) फ़रमाते हैं कि हम खब्बाब बिन अलअरत की अयादत के लिए गये। उन्होंने मर्ज के इज़ालः के लिए सात जगह दगवाया था। हमसे कहने लगे कि हमारे साथी गुज़र गये, उनको दुनिया ने कोई नुकसान नहीं पहुँचाया और हमको दुनिया इस तरह हासिल हो रही है कि

तामीरात के काम में लगाने के सिवा कोई सर्फ ही नहीं समझ में आता। अगर नबी (स0) मौत की दुआ करने से मना न फरमाते तो मैं मौत की दुआ करता। जब हम दूसरी मर्तबा उनसे मिले तो वह अपने घर की दीवार उठा रहे थे। कहने लगे, मुसलमान जिस चीज में खर्च करता है अज्र मिलता है, मगर इस मिट्टी के खर्च पर नहीं। (यानी मकान वगैरः के बनाने पर)।

(बुखारी–मुस्लिम)

मुश्तबिः चीजों के करीब होना हराम में मुब्तिला कर देता है

हजरत नुअमान (र0) बिन बशीर से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाह अलैहि व सल्लम ने फरमाया, हलाल भी जाहिर है, हराम भी जाहिर है। और इन दोनों के दर्मियान मिलती–जुलती चीजें हैं। बहुत से लोग नहीं जानते। पस जो शुब्हात से बचा उसने अपने दीन और आबरू को बेदाग रखा, और शुब्हात में पड़ गया वह हराम में मड़ गया। उस चरवाहे की तरह जो अपने जानवरों को रखत के गिर्द चराता है। करीब है कि जानवर रखत चर लें। सुन लो हर बादशाह के लिए एक रखत है। सुन लो अल्लाह की रखत उसके गुहर्रमात है। सुन लो जिस्म में गोश्त का एक लोथड़ा है। अगर वह अच्छा है तो सारा जिस्म अच्छा है, अगर वह बिगड़ा तो सारा जिस्म बिगड़ गया। वह दिल है।

(बुखारी–मुस्लिम)

रसूलुल्लाह (स0) की सदका के माल से इहतियात

हजरत अनस से रिवायत है कि नबी (स0) ने रास्ते में एक खजूर पाया तो फ़रमाया, अगर मुझे इसका डर न होता कि कहीं यह सदका का न हो तो मैं खा लेता।

(बुखारी–मुस्लिम)

नेकी और गुनाह की तारीफ

हजरत नव्वास (र0) बिन समआन से रिवायत है कि नबी (स0) ने फ़रमाया, नेकी अच्छा अख्लाक़ है। और गुनाह वह है जो दिल में खटके और तबीअत उस बात को नापसन्द करे कि लोग उसके गुनाह को जान ले।

(मुस्लिम)

हजरत वाबिस्सः (र0) बिन मसबद से रिवायत है कि मैं रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की खिदमत में हाजिर हुआ। आपने फ़रमाया, तुम नेकी के बारे में सवाल करने आये हो? मैंने अर्ज़ किया, जी हाँ। फ़रमाया, अपने दिल से पूछो। नेकी वह है जिससे नफ़्स मुतमइन हो। और गुनाह वह है जो नफ़्स में खटके और सीना में तरद्दुद हो, अगरचिः लोग तुमको मशविरः भी दें।

(अहमद)

मसलः की तहक़ीक़ के लिए सफर और हराम से इहतियात

हजरत उक़बः (र0) बिन हारिस से रिवायत है कि उन्होंने अबू वहाब (र0) की बेटी से शादी की। एक औरत आयी और बोली मैंने तुम्हें भी दूध पिलाया और जिससे तुमने शादी की है उसको भी। उकबः (र0) ने कहा, मुझे तो खबर नहीं कि तुम मेरी रजाअी माँ हो और न कभी तुमने मुझसे बतलाया। फिर वह मदीना में आँ हजरत (स0) की खिदमत में हाजिर हुए और आपसे अर्ज किया। आपने फरामया, अब कुछ नहीं हो सकता, अब तो तुमसे बतला दिया गया है। पस उकबः (र0) उनसे जुदा हो गये, और उस औरत ने दूसरे से शादी कर ली।

(बुखारी)

जिससे दिल में खटक पैदा हो छोड़ दो

हजरत ह्सन (र0) बिन अली (र0) से रिवायत है कि मुझे रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का फरमाना याद है कि उस चीज को छोड़ दो जिससे तुम्हारे दिल में खटक पैदा हो।

(तिर्मिजी)

हजरत अबू बक्र (र0) का मुश्तबिः चीज से क़ै करना

हजरत आयशः (र0) से रिवायत है कि हजरत अबू बक्र (र0) का एक गुलाम था। वह अपनी कमाई से कुछ हिस्सा हजरत अबू बक्र (र0) के लिए निकालता था जिसको यह खाते थे। एक दिन कोई चीज लाया और उसको उनके सामने पेश किया। हजरत अबू बक्र (र0) खाने लगे। गुलाम ने कहा,

शेष पृष्ठ 26

दूसरी किस्त

मुसलमानों के आपसी हुकूक (अधिकार)

अल्लामा सैयद सुलैमान नदवी रह0

अनुवादः नजमुस्साकिब अब्बासी गाजीपुरी

मुसलमानों की इस परस्पर भाई चारगी प्रेम और उपकार की और अधिक व्याख्या और ताकीद मुहम्मद (सल्ल0) ने अपनी जबान से ऐसे फरमाई, मुसलमानों को परस्पर एक दूसरे पर दया करने प्रेम करने और उपकार करने में मानव शरीर की तरह देखोगे कि उसके एक अंग में भी तकलीफ हो तो बदन के सभी अंग बुखार और बेख्वाबी में मुब्तला हो जाते हैं। सहीह मुस्लिम की एक रिवायत में है कि फरमाया "सारे मुसलमान मिलकर एक आदमी के जैसे हैं कि अगर उसकी आँख भी दुखे तो समस्त शरीर दुःख का एहसास करता है और अगर सर में दर्द हो तो पूरा जिस्म तकलीफ में होता है। तात्पर्य ये है कि मुस्लिम समुदाय एक शरीर है और उसके सभी व्यक्ति उसके अंग है। शरीर के एक हिस्से में भी अगर कोई दुखः दर्द हो तो सारे अंग उस पीड़ा को महसूस करते हैं और उस दुखः में शामिल होते हैं। यही मुसलमानो की स्थिति होनी चाहिये कि उनमें से एक को कष्ट पहुँचे तो सारे मुसलमानो को वह पीड़ा महसूस होनी चाहिये।

एक जगह आपने फरमाया कि मुसलमान परस्पर (बाहम) एक दूसरे से मिलकर इस प्रकार मजबूत होते हैं जैसे दीवार, कि उसके एक हिस्से से दूसरा हिस्सा मजबूत होता है। बुखारी में है कि ये कह कर आप (सल्ल0) ने एक हाथ की उँगलियों को दूसरे हाथ की उँगलियों में डाल कर दिखाया कि कैसे एक अंश से दूसरा अंश मजबूत होता है। आप (सल्ल0) ने फरमाया कि जिस प्रकार दीवार की एक ईंट दूसरी ईंट से मिलकर मजबूत हो जाती है। इसी प्रकार जमाअते इस्लामिया एक किला है जिसकी एक–एक ईंट एक–एक मुसलमान है। ये किला उसी समय तक सुरक्षित है जब तक उसकी एक ईंट दूसरी ईंट से मिली हुई है। जब ये ईंट अपनी जगह से खिसक जाएगी तो पूरी दीवार धम्म से जमीन पर आ जाएगी।

एक और जगह पर इर्शाद हुवा कि हर मुसलमान दूसरे मुसलमान का भाई है न वह उस पर अत्याचार करे न उसको असहाय छोड़े और न उसका तिस्कार करे। इन्सान के लिये ये बुराई क्या कम है कि वह अपने मुसलमान भाई का तिस्कार करे। मुसलमान का हर हिस्सा दूसरे मुसलमान पर हराम है, उसका खून, उसका धन और उसकी इज्जत; ये सही मुस्लिम में है। अबूदाऊद में है कि फरमाया : मुसलमान मुसलमान का भाई है तो वह न उस पर अत्याचार करे और न उसको उसके दुश्मन के हवाले करे। जो कोई अपने भाई की आवश्यकता पूरी करने में रहेगा तो अल्लाह उसकी जरूरत पूरी करेगा। और जो कोई किसी मुसलमान की तंगी को दूर करेगा तो खुदा उसके बदले प्रलय (कयामत) में उसकी तंगी को दूर करेगा। जो कोई किसी मुसलमान की बुराईयों को लोगों से छुपाएगा तो अल्लाह क़यामत के दिन उसका पर्दा रखेगा।

अबू दाऊद की एक रिवायत में है कि फरमाया "जो कोई अपने भाई का कष्ट दूर करेगा तो अल्लाह कयामत के दिन उसकी तकलीफ में से किसी तकलीफ को दूर करेगा, और जो कोई किसी निर्द्यन (तंगदस्त) पर आसानी करेगा तो अल्लाह दुनिया और परलोक (आखिरत) में उस पर आसानी करेगा। और जो कोई मुसलमान का पर्दा रखेगा तो अल्लाह दुनिया व आखिरत में उसका पर्दा रखेगा। अल्लाह अपने बन्दह की सहायता में रहता है जब तक वह बन्दह अपने भाई की सहायता में लगा रहता है। फरमाया "मुसलमान वह

है जिसके हाथ और जबान से मुसलमान बचें रहें ये सहीह बुखारी की एक रिवायत में है। दूसरी में है कि लोगों ने पूछा कि या रसूलुल्लाह सबसे अच्छा मुसलमान कौन है, फरमाया "जिसके हाथ और जबान से मुसलमान बचे रहें अर्थात जो मुसलमान अपने हाथ और ज़बान से किसी दूसरे मुसलमान को कष्ट न पहुँचाता हो वही सबसे अच्छा मुसल्मान है।

जरीर बिन अब्दुल्लाह बजली जो एक प्रसिद्ध सहाबी थे, कहते हैं कि " मैंने हजरत मुहम्मद (सल्ल0) से तीन बातों पर भक्ति प्रतिज्ञा (बैअत) की, नमाज़ को कायम रखना, ज़कात (धर्मादाय) देना और हर मुसलमान की शुभचिन्ता (ख़ैरख्वाही) करना।" कई रिवायतों में है कि आप (सल्ल0) ने फरमाया "मुसलमान को गाली देना खुदा की नाफरमानी है और उससे लड़ना खुदा का इन्कार है।" ये इस लिये कि अल्लाह ने मुसलमानों में आपस में भाई चारगी और सुलह शान्ति का आदेश दिया है। अब जो उसके विरूद्ध करता है वह अल्लाह के आदेश को नहीं मानता है और ये एक प्रकार से अल्लाह का इन्कार है अतः कुरआन में मुसलमान के अकारण व गैर इरादतन हत्या करने की सज़ा वही रखी है जो काफिरो (नास्तिक) के लिये तय है। फरमाया "किसी मुसलमान को शोभनीय नहीं कि वह दूसरे मुसलमान की हत्या करे मगर ये कि ग़लती से ऐसा हो जाए।" अनुवाद "और जो कोई किसी मुसलमान को जानबूझ कर कत्ल करेगा तो उसका बदला नर्क (दोज़ख) है। वह उसमें पड़ा रहेगा और अल्लाह उसपर क्रुद्ध हुवा और भर्त्सना (लानत) की और उसके लिये बड़ा अज़ाब तैयार किया।" (सूरह : निसा)

आख़िरी हज के अवसर पर आपने अति महत्वपुर्ण सम्बोधन में पहले लोगों को चुप कराया, फिर फरमाया "देखो मेरे बाद नास्तिक (काफिर) न हो जाना कि एक दूसरे की गर्दन मारने लगो।" एक और अवसर पर फरमाया कि "जो हम पर हथियार उठाए वह हम मुसलमानों में से नहीं।"

जान तो बड़ी चीज़ है किसी मुसलमान की आबरू (मर्यादा) के पीछे पड़ना भी बड़ा पाप है, फरमाया "सबसे बड़ा रिया किसी मुसलमान की मान–मर्यादा की ओर अकारण हाथ बढ़ाना है।" अगर कोई मुसलमान किसी ऐसी चिंता में घिरा हो जिसमें उसकी आबरू जाने का भय हो तो हर मुसलमान का कर्तव्य है कि उसको बचाने की कोशिश करे, इर्शाद हुवा जो कोई किसी मुसलमान को किसी ऐसे अवसर पर असहाय छोड़ेगा जिसमें उसकी मान–मर्यादा पर आँच आती हो और उसकी आबरू जाती हो तो खुदा भी उसको ऐसी जगह असहाय छोड़ेगा और जो कोई किसी मुसलमान की ऐसे मौके पर सहायता करेगा तो अल्लाह भी उसकी ऐसे मौके पर मदद करेगा।

अगर दो मुसलमानों में किसी नाराजगी के कारण बोल–चाल बन्द हो जाए तो हजरत मुहम्मद (सल्ल0) ने तीन दिन से अधिक ऐसा करने से मना किया है। इर्शाद हुवा कि किसी मुसलमान के लिये उचित नहीं कि वह तीन दिन से अधिक अपने भाई को छोड़ दे, मुलाकात हो तो वह इधर मुँह फेर ले और ये उधर मुँह फेर ले, और उन दोनो में अच्छा वह है कि जो पहले सलाम की शुरूआत करे। एक और तरीके से ये रिवायत (कथन) है कि आप (सल्ल0) ने फरमाया "आपस में ईर्ष्या (कीना) न रखो, हसद न करो और एक दूसरे को पीठ पीछे बुरा न कहो, ऐ अल्लाह के बन्दों! भाई–भाई हो जाओ और किसी मुसलमान के लिये वैद्य (हलाल) नहीं कि वह अपने भाई से तीन दिन से अधिक बोलना–चालना छोड़ दे।

एक मुसल्मान के लिये उसकी मान–मर्यादा से बढ़कर मामला उसकी आस्था का है। कुरआन ने कहा कि जब कोई अपने को मुसलमान ज़ाहिर करने के लिये सलाम करे तो उसको तुम ये न कहो कि तू मुसलमान नहीं है, अनुवाद : लाओ उसको जो तुम्हारी सलामती का कल्मा (कथन) डाले, ये न कहो कि तुम मोमिन नहीं।"

(सूरह : निसा)

मकसद ये कि जो कोई अपने को मुसलमान कहे या वह मुसलमान होने का दावा करे, किसी मुसलमान को ये अधिकार नहीं कि वह कहे कि तुम मुसलमान नहीं हो। एक जंग के दौरान एक सहाबी रजि0 ने एक काफिर को निशाने पर पाकर हमला किया, इस पर उसने तुरन्त कल्मा (इस्लामी मंत्र) पढ़ दिया, मगर उस पर भी उन सहाबी रजि0 उसकी हत्या कर दी। ये सूचना हजरत मुहम्मद (सल्ल0) तक पहुँची, आप (सल्ल0) ने उनको बुलाकर पूछा, उन्होने बताया कि या रसूलुल्लाह (सल्ल0) उसने केवल भय से कल्मा पढ़ा था, आप (सल्ल0) ने फरमाया, तुम उसके "लाइलाह इल्लल्लाहु" के साथ क्या करोगे, एक रिवायत में है कि फरमाया, क्या तुमने उसका सीना चीर कर देख लिया था।

एक बार इर्शाद हुवा "मोमिन को लानत करना या उस पर नस्तिकता (कुफ्र) की तोहमत लगाना उसकी हत्या के बराबर है" ये भी फरमाया कि जो कोई अपने भाई को ऐ काफ़िर! कहे तो वह कुफ्र दो में से एक पर लौटेगा अथार्त अगर वह वास्तव में काफिर न था तो उसने एक मुसलमान को काफिर कहा और ये खुद एक दरजे (श्रेणी) का कुफ्र है।

जान, ईमान (आस्था) और आबरू के बाद धन का दरजा है। इर्शाद हुवा कि जो कोई कसम खाकर किसी मुसलमान का हक मारेगा तो अल्लाह उसके लिये दोज़ख (नर्क) अनिवार्य और स्वर्ग (जन्नत) हराम करेगा। एक व्यक्ति ने पूछा, या रसूलुल्लाह! अगर कोई मामूली वस्तु हो तब भी, फरमाया पेड़ की एक डाली ही क्यों न हो।

फरमाया हर मुसलमान पर उसके मुसलमान भाई के पाँच हक हैं, सलाम का जवाब देना, उसके छीकने पर खुदा तुम पर रहमत (दया) करे कहना, उसकी दावत (निमंत्रण) स्वीकार करना, बिमार हो तो अयादत (मिजाज पुर्सी) करना और मर जाए तो उसके जनाजे के साथ चलना यानि ये कम से कम हुकूक है जिनसे दो मुसलमानों के बीच अच्छे सम्बन्धों का अन्दाजा होता है। इर्शाद हुवा कि जब कोई मुसलमान अपने बिमार भाई की अयादत को जाता है तो वह जब तक वापस न हो जन्नत की रविश पर होता है। हजरत अबू हुरैरह रजि0 कहते हैं कि आप (सल्ल0) ने फरमाया कि जो कोई ईमान व इख्लास (निःस्वार्थता) के साथ मुसलमान के जनाजे के पीछे चलता है, यहाँ तक कि उस पर नमाज पढ़ता है और उसके दफन से फरागत पाता है तो उसको पुण्य की दो रत्ती मिलती है जिनमें हर रत्ती उहद पहाड़ के बराबर होगी। अथार्त ये रत्ती दुनियावी पैमाने के अनुसार न होगी बल्कि ये उस पैमाने से होगी जिसका एक जर्रा अपनी बड़ाई में पहाड़ का रूप रखता है।

ये तमाम हुकूक़ जिनके अंशो को समेटा नहीं जा सकता और उस भाई चारगी के बिना किसी मोमिन का ईमान पूरा नहीं होता। इसपर हजरत मुहम्मद (सल्ल0) ने इस्लाम का कल्मा पढ़ने वालों को सम्बोधित करके इर्शाद फरमाया कि तुममें से कोई पूरा मोमिन नहीं हो सकता जब तक वह अपने भाई के लिये वही न चाहे जो अपने लिये चाहता है, तात्पर्य ये है कि मिल्लते इस्लामिया (इस्लामी समुदाय) का हर सदस्य दूसरे के साथ ऐसा प्यार करे जैसा वह स्वयं अपने साथ करता है। उसका फायदा अपना फायदा उसका घाटा अपना घाटा समझे। अबू दाऊद में है कि आप (सल्ल0) ने फरमाया मुसलमान मुसलमान का आईना है और मुसलमान–मुसलमान का भाई है। उसके नुकसान को दूर करता हे और उसके पीछे में उसकी सुरक्षा करता है।

देखिये कि हजरत मुहम्मद (सल्ल0) ने जमाअते इस्लामिया की इमारत कैसी ठोस आधारशिला पर बनाई थी, अगर आज भी उन नसीहतों पर अमल किया जाए तो उस इमारत की दीवारें ऐसी खंडित न रहे जैसी आज है। हर जमाअत उन्हीं उसूलों पर दुनिया में है और आगे भी बनेगी।

❑❑

किस्त : 5

जगनायक

हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम

मौलाना मुहम्मद राबे हसनी

अनुवाद मु0 गुफरान नदवी

छटी सदी (शताब्दी) ईसवी में दुनिया की हालत

हजरत मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से छः सौ साल पहले बनी इसराईल में हजरत ईसा अलैहिस्सलाम नबी पैदा हुवे थे, उनको रब्बुल आलमीन (विश्वपालक) ने मोजिज़े (ईश्वरीय चमत्कार) के तौर पर हजरत आदम अलैहिस्सलाम की तरह बग़ैर बाप के पैदा किया था ताकि उनकी अहमियत (महत्वता) माअलूम हो और फिर उनको अल्लाह तआ़ला ने नबी बनाया ताकि वह बनी इसराईल के बहुत बढ़े हुवे बिगाड़ को सुधार दें लेकिन बनी इसराईल ने उनका विरोध किया और उनके काम को रोका और नाफरमानी (अवज्ञा) करते रहे, उनके छः सौ साल बअ़द आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम नबी बनाए गए यह बीच का जमाना जो नबीयों से खाली गुज़रा मज़हबी व अख़लाक़ी लिहाज़ से बड़े बिगाड़ और ख़राबियों तक पहुँच गया था और बुराइयाँ आख़िरी हद (अन्तिम सीमा) तक बढ़ गई और इन्सानों ने मुतमद्दिन तबकात (सभ्य वर्गों) की देख रेख में अपने परवरदिगार (पालनहार) के हुकमों की सख़्त नाफ़रमानी का तरीक़ा अपना लिया था, खुद बनी इसराईल के लोगों का हाल बहुत बिगाड़ तक पहुँच गया था हालांकि यह लोग नबीयों की अवलाद थे और उनके बुजुर्गों (पूर्वजों) पर अल्लाह तआ़ला के बेहद इनआमात (उपकार) हो चुके थे, उन्होंने अल्लाह की उतारी हुई किताब में तहरीफ (परिवर्तन) कर डाली और अपनी इच्छा अनुसार उसके आदेशों में परिवर्तन किया और अपनी खुवाहिशात (इच्छाओं) का तरीका एखतियार किया।

उन्ही के पड़ोस में दुनिया के पच्छिमी भाग में रूमी मुशरिकों (अनेकेश्वर वादियों) का दौर दौरा था, उनमें तो और भी अख़लाकी (नैतिक) ख़राबियों, नफ़्स परस्ती, बेहयाई (अश्लीलता) अय्याशी खुदगर्जी (स्वार्थ परता) और जुल्म जियादती आखिरी हद तक पहुंची हुई थी, और सभ्य दुनिया का पूर्वी भाग जो ईरान और उसके पूरब के क्षेत्रों पर फैला हुआ था, वहाँ के लोग भी शिर्क के साथ, बादशाही जुल्म जौर और सख़्त समाजी ज़ियादतियों और खराबियों में पूरी तरह फसे हुवे थे।

इस तरह यह सदयाँ ख़राबी की इन्तिहा (सीमा) तक पहुंच गई थीं और यह ज़माना इन्सानियत के नाम पर एक धब्बा बन गया था जिसकी तफसील (विवरण) निम्नलिखित है :-

यूरोप के मुल्कों (देशों) का हाल :-

उन देशों में शुरू में शिर्क व बुत परस्ती (मूर्ति पूजा) आम (सामन्य) थी और अख़लाक़ी (नैतिक) ख़राबियाँ और ज़ियादतियाँ बहुत थीं फिर यहाँ के लोगों ने ईसाइयत कबूल (स्वीकार) कर ली लेकिन यह बुराइयाँ बढ़ती ही गईं, उनका हाल Robert Briffault लिखता है कि :-

"पांचवी सदी (शताब्दी) से लेकर दसवीं सदी (शताब्दी) तक यूरोप और उत्तरी पच्छिमी एशिया के इलाकों में मुशरिकाना तरीके और अख़लाकी व दीनी लिहाज़ से बड़ी बुराइयाँ और जुल्म ज़ियादतियाँ हर तरफ़ फैली थीं और हर दिन यह ख़राबियाँ जियादह और समान होती जा रही थीं, उस जमाने की वहशत बरबरीयत और जुल्म पुराने जमाने की वहशत और जुल्म से कई गुने जायद बढ़ी हुई थी यहाँ तक कि उसकी मिसाल एक बड़े तमुद्दुन (कल्चर) की लाश की तरह हो गई थी जो सड़ गई हो, अतः उस कल्चर के निशानात मिट रहे थे और उस पर जवाल (पतन) की मुहर लग चुकी थी, वह देश जहाँ यह कल्चर बढ़ा और फलाफूला पिछले जमाने

में उन्नति की सीमा को पहुँच गया था, जैसे इटली फ्रांस वहाँ तबाही, निराज और मनमानी जिन्दगी का दौर दौरा था।

उन देशों में हजरत ईसा अलिहिस्सलाम के बअद दीनी लिहाज से ईसाईयत के कुबूल (स्वीकार) कर लिये जाने पर अपने शुरू ही जमाने में इन्तिहा पसन्दो की तहरीफ (कट्टर पंथियों का अर्थ परिवर्तन) जाहिलों की तावील और रूमी नसरानियों की बुत परस्ती का शिकार हो गई थी, हजरत मसीह अलैहिस्सलाम की सादा व पाकीजह (पवित्र) तअलीम उस तमाम मलबे के नीचे दफन हो गई थीं, तौहीद (एकेश्वरवाद) और एखलास (निःस्वार्थता) के साथ अल्लाह की इबादत का नूर गहरे बादलों के अन्दर छुप चुका था।

चौथी सदी के आखिर में ईसाई सूसाईटी में तसलीस (त्रीश्वरवाद) का अकीदह किस तरह सरायत कर गया था उसके बारे में एक ईसाई विद्वान लिखता है :

"यह अकीदह (विश्वास) कि एक खुदा तीन सूत्रों (इकाइयों) से मिलकर बना है, ईसाई दुनिया की पूरी जिन्दगी में चौथी शताब्दी के अन्त ही में रच बस गया था, जिसको मसीही दुनिया सरकारी और मान्यता प्राप्त अकीदे की हैसियत से बहुत दिनों तक मानती रही, यहाँ तक कि उन्नीसवीं शताब्दी के उत्तरार्ध में इस अकीदे के परिवर्तन तथा इस स्वरूप तक पहुँचने का भेद खुला।"

साउथ एशिया का हाल

मजूस – "ईरान में बहुत पुराने जमाने से सलतनत कायम थी उन्होंने लगभग भूमन्डल के एक तिहाई हिस्से पर जो उस समय आबाद था, हुकूमत की, हुकूमत से अम्न (शान्ति) अम्न (शान्ति) से ऐश व इशरत (भोग विलास) पैदा हुवा, अय्याशी ने दिल व दिमाग को कमजोर कर दिया, और हुकूमत की बुनयादों को हिला दिया।

मानी के मजहब ने पुराने कानून को बिल्कुल खत्म कर दिया, औरत और मर्द की तबीअतों में आजादी और आवारगी पैदा कर दी, मुजदुक के धन, धरती, जोर, पर से मिलकियत (स्वामित्व) उठाने के कारण अश्लीलता, अत्याचार, और अवज्ञा का तूफान उठ खड़ा हुवा, माएं अपने बेटों के इश्क का शिकार बनीं, ताज और तख्त की मालिक शहजादियाँ अपने फौजी अफसरों के हैवानी (पाशव) भावनाओं से मौत के तख्ते पर लिटाई गई, हराम हलाल का फर्क मिट गया, फरहाद जैसे नमकहराम नौकर अपने बादशाह के रकीब बन गए और शेरवैह जैसे नालाइक लड़के ने हैवानी जोश में बाप का पेट फाड़ कर के शीरी पर कबजा किया दुष्टि सिपाही बहराम चोबीं महारानी पोरान दख्त के इश्क की आग का ईधन बना।

"रहमतुल लिल आलमीम" लेखक : काजी सुलैमान मन्सूर पुरी, भाग–3 पे0 70–71

ईरान की सासानी हुकूमत के पूरब में मारत की सभ्यता और शासन की अपनी व्यवस्था थी, बहुत सख्त शिर्क (अनेकेश्वरवाद) और मानव हीनता का माहौल छाया हुवा था।

बुद्ध धर्म – "हजरत मसीह अलैहि स्सलाम से छः सदी पहले बुद्ध धर्म की पैदाइश हुई, बुद्ध ने पाली भाषा को अपनाया और संस्कृत के पढ़ने पढ़ाने पर रोक लगा दी थी वैद मत की जगह बुद्ध मत स्थापित हो जाने से प्राचीन धर्म की किताबें नष्ट हो गईं और उनका जानने वाला भी कोई नहीं रहा।

शंकराचार्या ने उन लोगों से कुछ मुनाज़रे (तर्कवितर्क) किये और अपनी विद्या और ज्ञान का प्रदर्शन किया परन्तु वह 33,34 साल की आयु में मर गए, उनकी कोशिश और परिश्रम का परिणाम इतना हुवा कि संस्कृत को फिर दरबार में जगह मिल गई लेकिन इसके साथ साथ कविता में इतनी रूचि बढ़ी कि वास्तविकता कल्पना और विचारों में छुप गई।

पुरानी किताबों मे से एक किताब महाभारत पाई जाती है मगर वह भी यार लोगों की कांट छांट और परिवर्तन की वजह से सुरक्षित न रहीं बीस हजार इशलोक इस किताब में जअली तौर पर सम्मलित कर लिये गए।

बुद्ध धर्म की उन्नति राजा अशोक के काल तक रही उसके बअद बुद्धइज्म पतन की ओर चला गया,

शेष पृष्ठ 18

दीन की बातें

(पद्य)

इदारा

बैठे थे वां अस्हाब में इक दिन रसूले पाक
उन पर सलाम भेजे और रह़मत ख़ुदाए पाक

पूछा नबीये पाक से इक अजनबी ने आ
इस्लाम क्या है दीजिये मुझ को ज़रा बता

फ़रमाया आप ने वहीं कुछ देर के बिना
ता सुनने वाले जान लें इस्लाम को है क्या

अल्लाह के सिवा कोई मअ़बूद नहीं है
उस ज़ात के सिवा कोई मस्जूद नहीं है

मुझ को रसूल मान लो क़ाइम करो नमाज़
रमज़ान के रोज़े रहो हो जाओ पाकबाज़

देते रहो ज़कात तुम रखते हो माल गर
है उम्र में इक बार ह़ज ताक़त की शर्त पर

पूछा वहीं जो आप से ईमान दें बता
फ़ौरन दिया जवाब फिर उस का भी बरमला

ईमान हो अल्लाह पर उस के मलाइक पर
नाज़िल हुई किताबों पर उस के रसूलों पर

रोज़े जज़ा को ह़क़ कहे तक़्दीर पर ईमान
अच्छी बुरी हर एक को अल्लाह की तू जान

एह्सान क्या है फिर वहीं था तीसरा सुवाल
गोया हुये रसूल न की कुछ भी क़ील क़ाल

जब बन्दगी रब की करे यह हाल हो तेरा
गोया तेरा मअ़बूद है बस सामने खड़ा

गर तू नहीं है देखता देखे है रब तेरा
उस के सिवा में ध्यान तो जाए न कुछ ज़रा

पूछा जो उस ने आप से होगी क़ियामत कब
बोले रसूले पाक ये तो जानता है रब

कसरत से हों गुनाह तो उसको क़रीब जान
बिल्मअ़ना ये रिवायत है दिल से तो इस को मान

ये पूछ कर वह चल दिया और अपनी राहली
पूछा नबी ने जाऩते हो किस ने बात की

जिब्रील थे ये आप ने ख़ुद ही बता दिया
कर के सुवाल दीन ये तुम को सिखा दिया

ईमान का इस्लाम का एह्सान का पता
रब के रसूले पाक ने हम को बता दिया

आक़ा ने साफ कह दिया सुन लो कि क्या मैं हूँ
बन्दा हूँ मैं ख़ुदा का उस का रसूल हूँ

करना है जो सुवाल तो उस से करो सुवाल
जो मांगना है मांग लो कह कर के उस से ह़ाल

रब दे तो सुनलो रोकने वाला नहीं कोई
ना दे तो उस को दे सके ऐसा नहीं कोई

तक्मील दीन की हुई रब का है मेरे क़ौल
सब बिदअ़तें ज़लाल हैं ये है नबी का क़ौल

बेशक रसूले पाक पर जुर्अत है उसने की
जिस ने मुकम्मल दीन पर बिदअत कोई गढ़ी

या रब तू फ़ितनों से बचा और अपना ले बना
अपने रसूले पाक के रसते पे बस चला

सल्लि अ़ला नबिय्यिना सल्लि अ़लन्नबी
या रब तेरा करम रहे दाइम अ़लन्नबी

❑❑

यौमे आख़िरत का दूसरा मरहला

मौलाना मुजीबुल्लाह नदवी

यौमे आख़िरत का दूसरा मरहला या उस की दूसरी मन्ज़िल यौमुल क़ियामह है (यौमुल क़ियामह उस को इस लिये कहते हैं कि उस दिन सारे इन्सान मरने के बअ़द दोबारा उठ खड़े होंगे।) क़ियामत का दिन आने से पहले बहुत सी ऐसी निशानियां ज़ाहिर होंगी जिन से मअ़लूम हो जाए गा कि अब क़ियामत क़रीब है। क़ियामत से पहले दज्जाल का ज़ुहूर होगा, ह़ज़रत महदी आएंगे और आख़िरी आसमान से ह़ज़रत ईसा अ़लैहिस्सलाम का नुज़ूल होगा और वह सारी दुन्या में ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम) की शरीअ़त को रवाज देंगे, उस के बअ़द एक दिन आए गा कि ह़ज़रत इस्राफ़ील अ़लैहिस्सलाम सूर फूंकेंगे। उस की आवाज़ से सारे इन्सान व जानदार मर जाएंगे, दुन्या की सारी चीज़ें टूट फूट कर बराबर हो जाएंगी बड़े–बड़े पहाड धुनी हुई रुई की तरह हवा में उड़ने लगें ये और पूरी ज़मीन एक चटयल मैदान की तरह बराबर हो जाए गी, कुर्आन पाक ने बे शुमार आयतों में इस कैफ़ीयत व ह़ालत का नक़शा खींचा है यहाँ सिर्फ़ तीन आयतों का तर्जमा पेश है :–

जब सूर में एक बार फूंक मार दी जाए गी और ज़मीन और पहाड़ उठा लिये जाएं गे फिर दोनों एक ही बार में चूर–चूर कर दिये जाएं गे तो उस दिन होने वाली चीज़ हो पड़ेगी।

(अलह़ाक़्क़ह : 13–15)

और लोग आप से पहाड़ो के बारे में पूछते हैं सो आप फ़रमा दीजिये कि मेरा रब इन को बिल्कुल उड़ा देगा, फिर ज़मीन को एक हमवार मैदान कर देगा, जिस में तू न तो नाहमवारी देखेगा और न कोई बुलन्दी देखे गा।

(ताहाः 105–107)

और जब सूर फूंका जाएगा तो ज़मीन व आसमान में जितने जानदार हैं वह बे होश हो जाएं गे मगर जिस को अल्लाह तआ़ला बचाना चाहेगा उस को बचा लेगा।

(ज़ुमर :68)

फिर अल्लाह तआ़ला के हुक्म से हजरत इस्राफ़ील (अ़0) दोबारा सूर फूंकें गे तो दुन्या के इन्सान और जानदार ज़िन्दा हो जाएं गे और सब लोग अपनी अपनी क़ब्रों से उठ कर मैदाने ह़श्र में जमा हो जाएं गे।

फिर दोबारा सूर फूंका जाए गा तो वह लोग खड़े देख रहे होगे।

(यासीन : 51)

बिल्कुल उसी तरह वह अपनी क़ब्रों से निकल कर मैदाने ह़श्र की तरफ़ जूक़ दर जूक़ (झुन्ड के झुन्ड) भागेंगे जिस तरह बारिश के होते ही पौदे निकल आते हैं और लाखों करोड़ो की तादाद में कीड़े मकोड़े और पतिंगे निकल पड़ते है।

उस दिन लोग हर तरफ़ फैले हुए पतिंगों की तरह होंगे।

(अलक़ारिअ:)

जब सब लोग जमा हो जाएं गे तो फ़िरिश्ते अल्लाह के हुक्म से अहले ईमान और अहले कुफ़्र को अलग–अलग कर देंगे, वह अहले कुफ़्र से कहेंगे : ऐ मुजरिमो! आज तुम मोमिनों से अलग हो जाओ।

(यासीन : 59)

उस के बअ़द नेक लोगों को उन के अअ़माल नामे उन के दाहने हाथ में दिये जाएं गे और काफ़िर मुशरिक, मुनाफ़िक़ और बुरे लोगों को उन के अअ़माल नामे बाएं हाथ में दिये जाएं गे। जिनका अअ़माल नामा उन के दाहने हाथ में दिया जाए गा उन से हल्का हिसाब लिया जाए गा।

(अल इन्शिक़ाक़)

और जिन लोगों को बाएं हाथ में नाम–ए–अअ़माल दिया जाए गा वह कहें गे कि काश मेरा अअ़माल नामा मुझे न दिया जाता और मैं न जानता कि मेरा हि़साब क्या है।

(अलहाक़्क़ह : 25–26)

क़ियामत के दिन सूरज बिल्कुल सर पर आ जाएगा और उस की गर्मी की वजह से दिमाग खौलने लगेगा और जबान तालू से लग जाएगी, हर तरफ़ "नफ़्सी–नफ़्सी" मुझे बचाओ, मुझे बचाओ का आ़लम होगा माँ, बाप अपने बेटों और बेटियों से दूर भागें गे और बेटे, बेटियां अपने मां बाप से दूर भागे गी :–

उस दिन आदमी अपने भाई से और अपनी मां से और अपने बाप से और अपनी बीवी से भागे गा। (यअ़नी कोई किसी का हमदर्द न होगा)

(अ़बस : 34–36)

अलबत्ता जो लोग नेक होंगे अल्लाह तआ़ला उन को अपने अ़र्श के साये में जगह देगा और हुज़ूर (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) उनको कौसर का जाम पिलाएं गे जिस से उन की सारी तक्लीफें दूर हो जाएं गी और जो काफ़िर, मुशरिक और मुनाफ़िक़ होंगे वह तड़प रहे होंगे और वहां उन का कोई मददगार नहीं होगा, जिन नेक लोगों के बुत बना कर वह पूजते थे उन से वह मदद तलब करें गे मगर उन से वह दूर भागेंगे और उन के शिर्क से इन्कार करें गे।

(फ़ातिर : 14)

(यानी कहेंगे हम ने तुम से शिर्क करने कों नहीं कहा था)

मैदाने ह़श्र में सब से पहले मीज़ाने अ़द्ल (इन्साफ़ की तराजू) क़ाइम की जाए गी इस में सब के अअ़माल तौले जाएं गे जो लोग नेक होगे उन का हि़साब किताब आसान होगा और जो लोग बुरे होंगे उन को अपने अ़मल के रत्ती–रत्ती का हि़साब देना होगा, मगर हि़साब में किसी पर ज़र्रा बराबर ज़ुल्म न होंगा।

और क़ियामत के दिन हम मीज़ान क़ाइम करें गे तो किसी पर ज़र्रा भर भी ज़ुल्म न होगा।

(अंबिया : 47)

हि़साब किताब के बअ़द सब लोगों को पुलेसिरात से गुज़रना पड़ेगा, अहले ईमान और नेक लोग उस पर से तेज़ी से गुज़र जाएं गे और जन्नत में पहुंच जाएं गे और जो लोग ईमान से ख़ाली और बुरे होंगे वह उस से न गुज़र सकेंगे और उस से कट कर गिर पड़ें गे और दोज़ख़ में पहुंच जाएंगे। तुम में से हर शख़्स उस से गुज़रेगा।

(मरयम : 71)

ईमान रखने वाले बहुत से लोगों की अंबिया (अ़लैहिमुस्सलाम) सिफ़ारिश करें गे, उन की सिफ़ारिश से उन की मग़फ़िरत कर दी जाए गी, उस दिन ख़ुद रसूलुल्लाह (सल्लाहु अ़लैहि व सल्लम) बहुत से अहले ईमान की सिफ़ारिश फ़रमाएं गे आप की शफ़ाअ़त से बेशुमार लोगों को मुआ़फ़ कर दिया जाएगा और दोज़ख़ से निकाल कर जन्नत में भेज दिया जाए गा।

मगर शफ़ाअ़त के सिल्सिले में वह बातें जेहन में रखना ज़रूरी हैं जो तौ़हीद व शिर्क के बयान में लिखी गई हैं। शफ़ाअ़त के सिल्सिले में अल्लाह तआ़ला ने अपनी इजाज़त की शर्त लगा दी है, मतलब यह है कि अंबिया अलैहिमुस्सलाम या ह़ज़रत मुह़म्मद सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम उन ही लोगों की शफ़ाअ़त फरमाएं गे जिन के लिये अल्लाह तआ़ला की इजाज़त होगी, बहुत सी क़ौमें इसी वजह से गुमराह हो गईं कि उन्होंने यह समझा कि हम चाहे जितना बुरा काम करें नबी या नेक लोगों की शफ़ाअ़त से हम बख़्श दिये जाएंगे। यहूदियों का यही अ़क़ीदा बन गया था और ईसाई भी यही समझते हैं कि ह़ज़रत ईसा अ़लैहिस्सलाम हम लोगों की तरफ़ से कफ़्फ़ारह बन जाएंगे। अ़रबों में भी यह गुमराही मौजूद थी। कुर्आने पाक ने इस अ़क़ीदे को गुमराही क़रार दिया। इस लिये शफ़ाअ़त के भरोसे पर अ़मले स्वालेह़ की तरफ़ से ग़ाफ़िल न होना चाहिये, और न बुराई के क़रीब जाना चाहिये बल्कि हर वक़्त डरते रहना चाहिये कि मअ़लूम नहीं कि हम शफाअ़त के मुस्तह़िक़ होंगे या नहीं।

जन्नत व जहन्नम : इन तमाम

मराहिल के बअ़द जिन लोगों के लिये जन्नत का फैसला होगा, उन को फ़िरिश्ते जन्नत में पहुंचा देंगे और जन्नत में उन की जगह बता देंगे, जन्नत इतनी वसीअ़ (लम्बी चौड़ी) होगी कि ज़मीन व आसमान सब उस में समा जाएंगे।

"और दौड़ो ऐसी जन्नत की तरफ़ जिस की वुसअ़त (लम्बाई चौड़ाई) ज़मीन व आसमान के बराबर है जो मुत्तक़ीन (सय्यमीयों) के लिये तय्यार की गई है।"

(आले इम्रान : 133)

एक ह़दीस में है कि एक अदना (सबसे कम दर्जे के) जन्नती को भी इतनी बसीअ़ (लम्बी चौड़ी) जन्नत मिलेगी कि वह एक हज़ार बरस तक़ उस में चलता रहे। (तिर्मिज़ी) यह जन्नत हर तरह की निअ़मतों (उत्तम चीजों) से भरी होगी इन निअ़मतों के अ़लावह जन्नतियों को खुदा के फ़ज़्ल व करम से दो ऐसी निअ़मतें मिलेंगी जो इस दुन्या में न किसी इन्सान को ह़ासिल हुई थीं। और न कभी ह़ासिल हो सकती हैं। एक निअ़मत तो यह है कि इन्सान की जो ख़्वाहिश और आरजू होगी वह सब पूरी होगी, उस के पूरा होने में, छोटे, बड़े अमीर व ग़रीब, देहाती, व शहरी की कोई तमीज़ (अन्तर) न होगी और यह निअ़मतें कभी ख़त्म न होंगी।

और तुम्हारे लिये उस जन्नत में जिस चीज़ को तुम्हारा जी चाहेगा वह मौजूद होंगी और तुम्हारे लिये उस में जो मांगोंगे मौजूद होगा, यह बतौर मेहमानी के होगा।

(ह़ामीम सज्दा : 21–32)

दूसरी सबसे बड़ी निअ़मत जो मिलेगी वह अल्लाह का दीदार होगा, मोमिन के लिये इस से बड़ा दूसरा एअ़ज़ाज़ (सम्मान) नहीं कि वह अल्लाह के दीदार (दर्शन) से मुशर्रफ हो।

उस दिन बहुत से चेहरे तर व ताज़ा होंगे और अपने रब की तरफ़ देख रहे होंगे।

(क़ियमह : 22–23)

इस दुन्या में एक मोमिन अल्लाह को देखे बिग़ैर ईमान लाता है, आख़िरत में उस का सिला यह मिलेगा कि वह अल्लाह की तजल्ली से सरफ़राज़ (सम्मानित) होगा, मगर यह एअ़ज़ाज़ (सम्मान) सब के ह़क़ में बराबर न होगा। बल्कि जन्नत में अपने मरतबे के एअ़तिबार से यह नसीब होगा। ह़दीस नबवी में इस की तफ़्सील मौजूद है, आप ने फ़रमाया :–

अल्लाह के दीदार से ज़ियादह पसन्दीदा कोई चीज़ उन को वहां नहीं मिलेगी फिर आप ने यह आयत तिलावत फरमाई

"लिल्लज़ीन अह्सनुल् ह़ुस्ना व ज़ियादह्" जिन लोगों ने नेकी की है उन के वास्ते (जन्नत की) खूबी है और उस पर (अल्लाह का दीदार) और ज़ियादह।

(मुस्लिम)

एक ह़दीस में है कि सबसे ज़ियादह मुकर्रम वह लोग होंगे जिन को अल्लाह का दीदार सुब्ह़ व शाम होता रहेगा। (तिर्मिज़ी)

❑❑

जगनायक .....

बुद्धइज्म के सिद्धांत सभ्य दुनिया के साथ साथ नहीं चल सकते थे, भिक्षुको की बड़ी संख्या बुद्धिमत ने तय्यार कर दी जिसके कारण इस धर्म का शीघ्र पतन हुवा और देश की सीमा से बाहर भी हो गया, इससे भी इनकार नहीं कि पुरान ने भी इसको निकालने में बड़ा प्रयास किया था।

बुद्धमत के बअ़द देश की हालत बहुत जियादह खराब हो गई फ़िस्क़ व फुजूर (दुष्कर्म, पथभ्रष्टता) और फवाहिश (निर्लज्जता) का दौर दौरा हो गया, चक्रान्त, वाम मार्गी सहस्र भग, दर्शनान मुक्ती, शाक्त, नन्वार आवक, राम उपास डन्डी आदिवासियों ऐसे फिरके (सम्प्रदाय) पैदा हो गए जिन्होंने अख्लाक व तहजीब को जलाकर राख कर दिया।

यह फिरके तमाम हिन्दुस्तान में छाए हुवे थे, उन्हों ने शराब, जुवा बदकारी को मजहब का लिबास पहना कर पवित्र करार दिया था।

हिन्दुस्तान की यही बदतरीन हालत थी जब सिन्ध और उत्तर पच्छिमी सीमा और दक्षिणी भारत में इस्लाम के मुबल्लिग (प्रचारक) पहुँचे उन्होंने देश को इस्लाम की वास्तविकता और ज्ञान से परिचित कराया, पवित्र आत्मा वालों को एहसास हुवा, अधिकांश ने इस्लाम स्वीकार किया और अधिकांश ने अपना सुधार किया।"

(रहमतुल लिलआलमीन भाग 3 पृष्ठ 70,71)

❑❑

ग्रीष्म ऋतु

डा0 हारून रशीद सिद्दीक़ी

कहते हैं धरती अपनी धुरी पर एक ओर को 23 1/2 अंश झुकी हुई है। उस के दो चक्कर सिद्ध हुए हैं, एक तो अपनी धुरी पर, दूसरे सूर्य के गिर्द, सूर्य धरती से लग भग 14,95,97,900 कि0 मी0 दूरी पर चमक रहा है। धरती की बनावट सेब जैसी है, इस के दोनो सिरे चिप्टे हैं। उत्तर वाला चिप्टा भाग उत्तरीय ध्रुव तथा दक्षिण वाला दक्षिणीय ध्रुव कहलाता है। इस की कल्पित धुरी 12714 कि0 मी0 है एवं इस के बीचो बीच का मुहीत (परिध) लग भग 40,090 कि0 मी0 है। धरती के भीतर का तत्व पिघला तथा बहुत ही गर्म है, परन्तु यह पिघला गर्म तत्व धरती की उपरी परत से बहुत ही दूर है, धरती की ऊपरी परत पचासों किलो मीटर मोटी है। धरती की ऊपरी परत के लग भग तीन भाग पर समुद्र हैं, एक चौथाई भाग पर नदी पहाड़ जंगल और आबादी हैं। धरती अपनी कल्पित धुरी पर 24 घन्टे में 40,090 कि0 मी0 अर्थात लग भग 27,84027 कि0 मी0 प्रति मिनट के बेग से घूमती है। यह जब अपनी धुरी पर घूमती है तो इस का आधा भाग सदैव सूर्य के समक्ष रहता है और आधा भाग आड़ में रहता है, जो भाग सूर्य के समक्ष रहता है उसमें दिन रहता है और जो आड़ में रहता है उसमें रात रहती है। इस प्रकार सदैव आधी धरती पर दिन तथा आधी पर रात रहती है और यह दिन रात हर समय धरती की चाल के अनुसार लग भग 28 कि0 मी0 पर मिन्ट के बेग से चलते रहते हैं। जो बात ऊपर कही गई इसे भूगोल के विद्वानों ने तर्कों द्वारा सिद्ध किया है।

हमारे कुछ इस्लामिक विद्वानों ने पृथ्वी के चक्कर से दिन रात बनने से इन्कार कर दिया है उन का कहना है कि सूर्य के पृथ्वी के गिर्द चक्कर लगाने से दिन रात बनते हैं। उन का तर्क है कि अल्लाह की किताब में सूर–ए–यासीन की आयत 38 (वश्शम्सु तज्री लि मुस्तकर्रिल्लहा) "और सूर्य चला जाता है अपने नियुक्त ढर्रे" परन्तु विद्वानों ने सिद्ध किया है कि सूर्य अपने मंडल साहित एक ओर को पर सिकन्ड 20 कि0 मी0 के बेग से भागा चला जा रहा है। अतः पृथ्वी का चलना मानना कुरआन के विरुद्ध न हुआ कि सूर्य का चलना भी सिद्ध हो गया।

पृथ्वी का दूसरा चक्कर सूर्य के गिर्द है यह चक्कर पृथ्वी एक वर्ष में पूरा करती है पृथ्वी की यह चाल भी बहुत ही तीव्र है इस लिये कि 14,95,97,900 कि0 मी0 अर्ध व्यास का परिध (मुहीत) लग भग 94,03,29,627 कि0 मी0 हुआ जिसे पृथ्वी साल भर में पूरा करती है। अर्थात लग भग 1,790 कि0 मी0 पर मिनट के बेग से भागती है। इस में सूर्य का व्यास जोड़ा जाए तो पृथ्वी का बेग और बढ़ जाएगा।

प्रश्न यह उठता है कि पृथ्वी के इतने तीव्र बेग के दोनों चक्करो का हम को अनुभव क्यों नहीं होता? कारण यह है कि पृथ्वी अपनी जगह पर भी तथा सूरज के गिर्द भी अपने वायु मंडल के साथ घूमती और चलती है। आप ने हवाई जहाज़ का सफर किया है तो बड़ी सरलता से इसको समझ सकते हैं अपितु रेल और मोटर के सफर से भी इसको समझा जा सकता है जहाज कितने बेग से चल रहा है? रेल किस चाल से भाग रही है? परन्तु उसके भीतर शान्ति है, वहां उस की चाल का कोई प्रभाव नहीं है, और बाहर देखो तो लगता है सब कुछ भाग रहा है; यही हाल इस पृथ्वी का है कि इसके वायु मन्डल के भीतर सब कुछ शान्ति है तथा जो वस्तुएं पृथ्वी के वायु क्षेत्र के बाहर हैं सूर्य नक्षत्र आदि वह चलते नज़र आते हैं।

पृथ्वी की कल्पित भूमध्य रेखा (खते इस्तवा) और उसके उत्तर 23 1/2 अंश तथा दक्षिण 23 1/2 अंश का क्षेत्र ग्रीष्म क्षेत्र कहलाता है इस क्षेत्र पर सदैव सूर्य की किरनें सीधी पड़ती हैं, इस क्षेत्र में सदैव

ग्रीष्म ऋतु रहता है।

पृथ्वी अपनी कल्पित धुरी पर एक ओर को 23 1/2 अंश झुकी है अतः इस के सूर्य के गिर्द घूमते समय जब झुकाव वाला उत्तरी भाग सूर्य की ओर हो जाता है तो पृथ्वी के उत्तरी अर्ध गोले में ग्रीष्म ऋतु आता है तथा दक्षिणी अर्ध गोले पर शीत ऋतु होता है, फिर जब पृथ्वी घूमते घूमते सूर्य के दूसरी ओर पहुंचती है तो पृथ्वी का उत्तरी अर्ध गोल सूर्य से दूर हो जाता है तथा दक्षिणी अर्ध गोला सूर्य से करीब हो जाता है तो अब पहले का उल्टा अर्थात दक्षिणी अर्ध गोले पर ग्रीष्म ऋतु तथा उत्तरी अर्ध गोले पर शीत ऋतु होता है और चूंकि सूर्य की ओर झुके वाले अर्ध गोले के आधे भाग से अधिक पर सूर्य का प्रकाश पड़ता है अतः इस भाग पर दिन बड़ा हो जाता है, और रात छोटी हो जाती है जब कि सूर्य से दूरी वाले भाग पर रात बड़ी दिन छोटा हो जाता है।

यह बात वर्णनीय है कि जब उत्तरी अर्ध गोले पर ग्रीष्म ऋतु होता है तो उत्तरी ध्रव छे मास तक सूर्य से छुप नहीं पाता और वहां छे मास का दिन होता है। उस काल में दक्षिणी ध्रव पर छे मास तक सूर्य नहीं दिखता और वहां छे मास की रात होती है और जब दक्षिणी अर्ध गोले ग्रीष्म ऋतु आता है तो इस का उलटा होता है। परन्तु इन दोनो ध्रवों पर सूर्य दूर होने के तथा सूर्य की किरणें तिरछी पड़ने के कारण सदैव ठन्डक रहती है यहां तक कि उस क्षेत्र के समुद्र जमे रहते हैं।

विज्ञान की इन बातों के मानने से हमारे धर्म विश्वास पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता अतः इन अनुभवी बातों का मानना आवश्यक है। परन्तु कुछ लोग विज्ञान द्वारा परोक्ष की बातें सिद्ध करने लगते हैं यह बात हानि कारक हो सकती है और हमारे विशस को डगमगा सकती है। जैसे पृथ्वी की भीतरी बनावट तथा भीतरी तत्वों को लेकर कियामत सिद्ध करने लग जाते हैं कि एक दिन धरती की भीतरी ज्वाला फट पड़ेगी और कियामत आ जाए गी। ठीक है आप के निकट धरती की भीतरी ज्वाला फटने से कियामत सिद्ध हो रही हैं तो सूर (नरसिंहा) फूकां जाना आसमान का फटना तारों का गिरना, सूर्य का प्रकाश हीन होना, फिर पुनः सूर फूकां जाना फिर सब का जीवित होना, हश्र का होना, लेखा जोखा होना, जहन्नम का आना, जहन्नम पर पुले सिरात का होना, उस पर से गुज़रना, जन्नत अथवा जहन्नम में भेजा जाना, जहन्नम का हाल वहां की यातनाएं, जन्नत का हाल वहां के पुरस्कार यह सब किस अनुभावी विज्ञान से सिद्ध करें गे। अतः अनुभावी वैज्ञानिकों से अनुरोध है कि वह इस्लाम के परोक्ष विश्वासों (ईमान बिलग़ैब) की बातों को विज्ञान द्वारा सिद्ध करने की चेष्ठा न करें। जन्नत, जहन्नम, क़ियामत हश्र का हिसाब व किताब, जिन्न फ़िरिश्तों जैसी परोक्ष की बातें सिर्फ़ और सिर्फ़ अल्लाह के नबियों ही द्वारा ज्ञात की जा सकती है।

हम ईमान लाए हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम पर कि वह अल्लाह के रसूल हैं। उन के बताने ही पर हम अल्लाह की सारी सिफ़ात पर ईमान लाए और माना कि अल्लाह मुशरिक को न बख़्शेगा हम ईमान लाए बे देखे जिन्नों और फ़िरिश्तों पर क़ब्र में नकीरैन के सवालों पर, क़ब्र की राहतों पर, क़ब्र के अ़ज़ाब पर क़ियामत के दिन ज़िन्दा किये जाने पर हश्र के मैदान में हिसाब व किताब पर हम ईमान लाए जहन्नम और उस के अ़ज़ाब पर जन्नत और उस के इनआ़मात पर। अल्लाह पर ईमान जैसा कि वह अपने नामों और सिफ़तों के साथ है उसके फ़िरिश्तों पर ईमान उस की किताबोक पर ईमान उस के रसूलों पर ईमान, क़ियामत के दिन पर ईमान अच्छी बुरी तक्दीर पर ईमान कि वह अल्लाह ही की जानिब से है। ग़रज़ कि ईमानियात की सारी बातों को हमने अल्लाह के अन्तिम नबी हज़रत मुहम्मद सल्लाहु अ़लैहि व सल्लम के बताने से माना है उन बातों का ज्ञान अनुभाविक विज्ञान की पहुंच से बाहर है।

❑❑

सामाजिक

जल ही जीवन है

विश्व जल दिवस पर विशेष

एम0 हसन अंसारी

ज़िन्दगी के लिये पानी ज़रूरी है। हमारी ज़मीन पर ज़िन्दगी इस लिये है कि यहाँ पानी है। दूसरे किसी ग्रह (प्लैनेट) पर अभी तक न पानी मिला है न ही जीवन। रौशनी की क़द्र व कीमत अँधेरे से है, दिन की रात से, अमीरी की गरीबी से, ज्ञान की अज्ञानता से, सत्य की असत्य से, जिन्दगी की मौत से और दुनिया की रौनक आखिरत से है। बिना पानी के जीवन की कल्पना नहीं की जा सकती। इसी लिये तो रहीम ने कहा है :–

'रहिमन' पानी राखिये बिन पानी सब सून।
पानी गये न ऊबरे मोती, मानुस, चून।।

'जल ही जीवन है'– के कथन को इस्लामी संस्कृति, जिसका उद्‌गम अरब प्राय द्वीप में हुआ और जहाँ पानी भारतीय उपमहाद्वीप की अपेक्षा कम है, ने अपने आचार–व्यवहार के द्वारा सिद्ध किया है और इसे चरितार्थ बनाया है– वजू बनाने में बेजा पानी न इस्तेमाल करने की हिदायत देकर, टोंटीदार लोटे का इस्तेमाल करके और अपनी प्यास पर दूसरों की प्यास को प्राथमिकता देकर तथा प्याऊ लगा कर। जरूरत इन हिदायतों पर अमल करने की है, इन्हें व्यावहारिक रूप देने की है। मात्र टोंटीदार लोटा प्रयोग करने से कोई मुसलमान नहीं हो जाता। क्या पवित्र गंगाजल को टोंटीदार पाट में लेकर वितरित नहीं करते? फिर यह तंग नज़री क्यों?

पानी कुदरत की एक नेअमत है, प्रकृति का वर्दान है। इसे बचा कर खर्च करना चाहिये। सभ्यता के विकास के मूल बिन्दु पानी का खर्च, सभ्यता के विकास के साथ, विशेषकर उठा कटिबन्धीय एशियाई देशों में, बहुत बढ़ गई हैं। घर में, सफर में, हम दिन प्रतिदिन अधिक पानी का इस्तेमाल करने लगे हैं और असावधानी बर्तने लगे हैं। क्या हम पानी के खुले नल को, सार्वजनिक स्थानों पर, बन्द करने का काम करते हैं? हमारे पास समय नहीं! क्या हम नहाने–धोने में बेतहाशः पानी का प्रयोग नहीं करते? कुँएं अब रहे नहीं, नदियाँ सूखने लगी हैं, तालाबों का वजूद, मछली तालाबों को छोड़कर, समाप्त प्राय है। समुद्र का जलस्तर सामान्य नहीं रहा, नलों की संख्या जरूर बढ़ी है जो पानी (जीवन) की अपव्ययता (फ़िजूल खर्ची) का मुख्य कारण है। हमारे समाज में सिविक सेन्स पतनोन्मुखी है, जिस के न होते कोई समाज सुखषान्ति के साथ नहीं रह सकता।

23 मार्च 2009 को पानी की किल्लत की आषंका के प्रति लोगों में चेतना जागृत करने के लिये 'विश्व जल दिवस (वर्ल्ड वाटर डे) मनाया गया। जानकार विद्वानों ने जनमानस का ध्यान आकर्षित किया। आँकड़े बताते हैं कि पानी की जरूरत पिछले साठ वर्षों में, चार गुना जनसंख्या वृद्धि के साथ, बढ़ी है, इस हिसाब से आजादी के समय अगर पचास इंच वर्षों से काम चलता था तो इस समय 200 इंच वर्षा होनी चाहिये लेकिन आज तो पचास इंच से भी कम वर्षा होती है। फलतः जल स्तर तेजी से नीचेगिर रहा है और यदि समय रहते ध्यान न दिया गया, विशेषकर सिंचाई के साधनों को सुधारा न गया, हरे वृक्षों के कटान को रोका न गया तो पानी की समस्या एक विकराल रूप धारणर कर लेगी, और तब जल ही जीवन है' का मतलब हमारी समझ में स्वतः आ जायेगा, पर तब बहुत देर हो चुकी होगी। हम समय रहते चेतें, पानी बचा कर खर्च करें, 'जीवन' से खेलवाड़ करना बन्द करें, अपने लिये और अपनी अपनी भावी पीढ़ी के लिये 'जीवन'की रक्षा करें, बूँद बूंद पानी बचायें। पानी के इस्तेमाल के प्रति अपनी सोच बदलें। बूँद–बूँद

शेष पृष्ठ 31

? आपके प्रश्नों के उत्तर ?

इदारा

प्रश्न : वुज़ू करने का तरीक़ा लिखये।

उत्तर : हजरत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु ने वुज़ू के लिये पानी मंगवाया, पहले आप ने तीन बार अपने हाथों पर (गट्टों तक) पानी डाला और उन्हें धोया। फिर बरतन में हाथ डाले और तीन बार कुल्ली की, नाक सिन्की और चेहरा (मुखड़ा) धोया, फिर तीन बार कुहनियों तक दोनों हाथ धोये, फिर सर (और कानों) का मसह (भीगा हाथ फेरना) किया फिर तीन तीन बार टख़नों तक दोनों पैर धोए। फिर फरमाया मैं ने नबी (सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम) को इसी तरह़ वुज़ू करते देखा।

(बुख़ारी व मुस्लिम)

प्रश्न : वुज़ू में फ़र्ज़ कितनी बातें हैं।

उत्तर : वुज़ू में चार फ़र्ज़ हैं, चेहरे को धोना, (पेशानी के बालों से ठोड़ी के नीचे तक), दोनों हाथों का धोना, (कुहनियों समेत), सर का मसह (चौथाई सर का), टख़नों समेत दोनों पैरों का धोना। एक एक बार धोना फ़र्ज़ है और तीन तीन बार धोना सुन्नत है, अतः हर हर अंग तीन तीन बार धोना चाहिये। वुज़ू की नीयत अगरचि अह़नाफ़ के नज़दीक फ़र्ज़ नहीं है, इसी तरह़ तस्मियः भी फ़र्ज़ नहीं लेकिन चाहिये कि दिल में वुज़ू से पाकी ह़ासिल करने की नीयत कर के बिस्मिल्लाह पढ़ कर वुज़ू करें। वुज़ू के फराइज़ कुर्आन मजीद की सूर–ए–माइदः की आयत 6 से ज्ञात हुए हैं। शीआ़ ह़ज़रात पैर धोने के बजाए पैरों पर मसह़ करते है जब कि पैर धोने पर सह़ाब–ए–किराम का इजमाअ़ (व्यापक सहमत) है। ह़ज़रत अ़ली व ह़ज़रत अनस रज़ियल्लाहु अ़न्हुमा से पैरों पर मसह़ की बअ़ज़ रिवायतें मिलती हैं। लेकिन उन का रुजूअ़ भी साबित है, अर्थात तत्पश्चात पैरों का धोना मान लिया था।

देखिये फ़िक़्हुस्सुन : पृष्ठ 44

प्रश्न : क्या नमाज़ बैठ कर पढ़ी जा सकती है?

उत्तर : नमाज़ों की सुरक्षा (मुह़ाफ़ज़त) करो विशेष कर बीच की नमाज़ की तथा अल्लाह के लिये विनम्रता तथा सुशीलता (ख़ुशूअ़ व ख़ुज़ूअ़) पूर्वक खड़े हो। (अल बक़रह : 238) जो शख़्स खड़ा हो सकता है उस के लिये फ़र्ज़ नमाज़ में खड़ा होना फ़र्ज़ है। इस पर इजमाअ़ (व्यापक सहमत) है। (अलफ़िक़्ह अ़लल मज़ाहिबिल अरबअ़ : जिल्द 1 पृष्ठ :186)

अतः फ़र्ज़ नमाज़ बिना उचित कारण के बैठ कर पढ़ने से नमाज़ न होगी परन्तु जो व्यक्ति किसी उ़ज़्र (उचित कारण) से बैठ कर नमाज़ पढ़ता है उस के सवाब में कमी नहीं होती। ह़ज़रत मूसा अशअ़री (रज़ि0) से रिवायत है कि नबी सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमाया "जब आदमी बीमार हो जाए या सफ़र में हो तो अल्लाह तआ़ला उस के लिये वही अ़मल लिखता है जो वह सिह़त (स्वास्थ्य) की हालत में करता था। (बुख़ारी) इससे ज्ञात हुआ कि सिह़त की ह़ालत में वह खडे होकर नमाज़ पढ़ता था उसका जो सवाब उसको मिलात था अब बीमारी की मजबूरी से बैठ कर नमाज़ पढ़ता है तो उतना ही सवाब पाएगा।

प्रश्न : जमाअ़त की नमाज़ में अगर मुक़तदी (इमाम के पीछे नमाज़ पढ़ने वाला) सूर–ए–फ़ातिह़ा न पढ़े तो क्या उस की नमाज़ न होगी?)

उत्तर : ह़ज़रत सामित (रज़ि0) से रिवायत है कि नबी (सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम) ने फ़रमाया "जिस शख़्स ने (नमाज़ में) सूर–ए–फ़ातिह़ा नहीं पढ़ी उस की नमाज़ नहीं।

(बुख़ारी व मुस्लिम)

ह़ज़रत अबू हुरैरा (रज़ि0) से रिवायत है कि नबी (सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम) ने एक जहरी नमाज़ से सलाम फेरा तो आप ने

फ़रमाया "क्या अभी तुम में से किसी शख़्स ने मेरे पीछे क़िराअत की है? एक शख़्स ने जवाब दिया, "जी हां मैं ने क़िराअत की थी ऐ अल्लाह के रसूल! आप ने फ़रमाया तभी में सोच रहा था कि मुझे क़ुर्आन पढ़ने में उलझन क्यों पेश आ रही है। जब लोगों ने नबी (सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम) से यह बात सुनी तो वह जहरी नमाज़ों में क़िराअत करने से रुक गये। (अबू दाऊद तिर्मिज़ी, नसई वग़ैरह) क़ुर्आने मजीद में है कि "जब कुर्आन मजीद पढ़ा जाए तो उसे ग़ौर से सुनो और ख़ामोश रहो" (7 : 204) ह़ज़रत जाबिर (रज़ि0) से रिवायत है कि नबी (सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम) ने फ़रमाया कि "जिस शख़्स का इमाम हो तो इमाम की क़िराअत उस की क़िराअत है।" (दार कुत्नी) ह़ज़रत अबू हुरैरा (रज़ि0) से रिवायत है कि नबी (सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम) ने फ़रमाया : "इमाम इस लिये बनाया गया है कि उस का इत्तिबाअ़ (अनुकरण) किया जाए, लिहाजा जब वह अल्लाहु अकबर कहे तो तुम भी अल्लाहु अकबर कहो और जब वह किराअत करे तो तुम खामोश रहो।

(मुस्लिम)

इन रिवायात और कुर्आन की आयत के प्रकाश में इमाम के पीछे की नमाज़ में सूर–ए–फ़ातिहा पढ़ने न पढ़ने में ख़ासा मत भेद हुआ है। अहले ह़दीस ह़ज़रात इमाम के पीछे की नमाज़ में भी सूर–ए–फ़ातिहा ज़रूर पढ़ते हैं। ह़नफ़ी ह़ज़रात के इमाम जमाअत की नमाज में सूर–ए–फातिहा के पश्चात इतनी देर **खामोश रहते हैं** कि मुकतदी लोग सूर–ए–**फातिहा** पढ़ लें वह इमाम की जहरी किराअत के वक्त खामोश रहतें हैं। हम लोग जमाअ़त की नमाज में मजकूरा आयत के अंतरगत इमाम के पीछे किराअत करने को मकरूहे तहरीमी समझते हैं और इस को कुर्आन के हुक्म के खिलाफ समझते हैं। और इमाम की किराअत को मुकतदी की किराअत मानते हैं अलबत्ता कुछ उलमा सिर्री (बे आवाज़) नमाजों में सूर–ए–फातिहा पढ़ने को मुस्तहब समझते हैं। इमाम अबू हनीफा (रह0) के शार्गिद इमाम मुहम्मद का भी यही कौल नक्ल किया गया है। इस दौर में मौलाना अब्दूश्शकूर (रह0) ने अपनी किताब इल्मुल फिक्ह भाग 2 में यही लिखा है कि सिर्री नमाजों में इमाम के पीछे मुकतदियों के लिये सूर–ए–फातिहा पढ़ना मुस्तहब है। मेरा अपना भी यही रूजहान है। जो अपनी तहकीक से इमाम के पीछे सूर–ए–फातिहा पढ़ता है तो न उस को रोकता टोकता हूँ न बुरा समझता हूँ। जहरी नमाजों में इमाम के पीछे किराअत नहीं करता, सिर्री नमाजों में इमाम के पीछे सूर–ए–फातिहा का पढ़ना मुस्तहब जानता हूँ।

प्रश्न : क्या कब्र पर कोई इमारत बनाई जा सकती है?

उत्तर : हजरत जाबिर (रजि0) से रिवायत है कि मैंने नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) को कब्र पर बैठने, उसे पक्की बनाने और उस पर कोई इमारत (भवन) बनाने से रोकते सुना है।

(मुस्लिम, नसई आदि)

प्रश्न : क्या मुर्दे को दफ्न करने के पश्चात वहाँ रुकना चाहिये?

उत्तर : हजरत उस्मान (रजि0) से रिवायत है कि जब रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) मय्यित को दफ्न कर के फारिग हो जाते तो कब्र के पास ठहरते और लोगों से फरमाते कि अपने भाई के लिये अल्लाह तआ़ला से मगफिरत और साबित कदम रहने की दुआ करो इस लिये कि इस वक्त उस से सवाल होगा।

(अबूदाऊद)

दुआए मगफिरत करना ह़दीस से साबित है, लेकिन अपनी तरफ से कब्र पर अजान कहना बिदअत है।

प्रश्न : आप ने मार्च के सच्चा राही में पृष्ठ 34 पर ऊँट का पेशाब पीना लिख दिया यह कैसे सहीह है?

उत्तर : नहीं मैंने ऊँट का पेशाब पीना नहीं लिखा बल्कि ह़दीस नक्ल की जिस में नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने कुछ लोगों को उन की किसी बीमारी पर ऊँटनी का दूध और उसके पेशाब पीने को फरमाया। उस ह़दीस से इमामों ने जो मसअला निकाला वह भी लिख दिया। अल्लाह आप को समझ दे।

❑❑

तीसरी अंतिम किस्त

लिखने की कला

शमीम इकबाल खाँ

1. अल्प विराम चिन्ह अर्थात Comma (,)

अल्प विराम चिन्ह का अर्थ है थोडी देर के लिये रुकना या ठहरना, इसका उपयोग प्रायः दो शब्दों, पदों या वाक्याशों के बीच होता है

क) जब पढ़ते, बोलते या लिखते समय अल्प समय के लिये रुकना पड़े तो तो वहां इस चिन्ह का प्रयोग किया जाता है।

ख) जब एक ही प्रकार के वाक्यांश पास–पास लिखे जायें उस समय भी इसका प्रयोग किया जाता है। जैसे–

1. वह रोज़ आता है, पढ़ता है और चला जाता है।

2. माहत्मा गांधी, हरिश्चन्द्र के समान सत्यवादी, कृष्ण के समान नीतिज्ञ और बुद्ध के समान अहिंसावादी थे।

ग) आश्रित वाक्यों को अलग करने के लिये भी इस चिन्ह का प्रयोग होता है। जैसे–

आज मैं काम पर नहीं जाऊँगा, क्योंकि मैं अस्वथ हूँ।

घ) सम्बोधन के बाद भी प्रायः इस चिन्ह का प्रयोग होता है। जैसे–

1. भाइयो, समय आ गया है, सावधान हो जाओ।

2. वीरो, देश तुम्हें पुकार रहा है।

2. अर्द्ध विराम अर्थात् Semi-colon (;)

इसका प्रयोग उस स्थान पर किया जाता है जहाँ समान आधार वाले लम्बे वाक्यों को अलग करने की आवश्यकता हो और जहाँ अल्प विराम की अपेक्षा बहुत अधिक ठहरना पडे। जैसे–

प्रधान मंत्री महोदय लखनऊ आये ; जनता की श्रद्धा उमड़ पड़ी।

3. पूर्ण विराम (।)

पूर्ण विराम का अर्थ है पूरी तरह रुकना या ठहरना जहाँ एक वाक्य अपने पूर्ण अर्थ को प्रकट कर समाप्त हो जाता है, वहाँ इस चिन्ह का प्रयोग किया जाता है। जैसे–

1. वह गया।

2. मैंने आज ही कार्य–भार संभाला।

3. ग्रहण किया है।

विशेष–

अब कहीं–कहीं पूर्ण विराम **(।)** के स्थान अंग्रेजी का फुलस्टाप **(.)** का प्रयोग किया जाने लगा है।

4. योजक चिन्ह अर्थात् Hy-phen (-)

क) इस चिन्ह का प्रयोग प्रायः दो शब्दों को जोड़ने में किया जाता है। जैसे–

1. माता–पिता, घर–द्वार, सीता–राम।

2. लेन–देन, आकाश–पाताल।

3. भूख–प्यास, उठना–बैठना।

4. गिरना–गिराना, खाना–खिलाना आदि।

ख) इस चिन्ह का प्रयोग उस समय भी किया जाता है जब लाइन का अन्तिम शब्द उस लाइन में समायोजित न हो रहा हो उस शब्द को तोड़ कर उसके स्थान पर योजक चिन्ह (-) लगा कर शब्द का टूटा हुआ भाग दूसरी लाइन के पहले स्थान पर लिख दिया जाता है। उदाहरण–

मान लीजिये शब्द 'समायोजित' लाइन के अन्त में आ रहा है परन्तु पूरे शब्द के लिये स्थान नहीं है तो ऐसी दशा में 'समा–' लाइन के अन्त में लिख दिया जायेगा तथा अगल लाइन 'योजित' शब्द से आरम्भ कर दी जायेगी।

5. प्रश्नवाचक चिन्ह अर्थात् Sign of Interogation (?)

क) इस चिन्ह का प्रयोग प्रश्न वाचक के अन्त में लगया जाता है। जैसे–

i) क्या तुम आगरा जाओगे?

ii) आप शायद बहराइच के रहने वाले हैं?

iii) जहाँ भ्रष्टाचार हो, वहाँ ईमानदारी का क्या काम?

ख) प्रश्न वाचक चिन्ह ऐसे वाक्यों में नहीं लगाये जाते जिन में प्रश्न आज्ञा के रुप में किया गया हो। जैसे–

कलकत्ता का प्रसिद्ध बाजार बताओ

ग) जिन वाक्यों में प्रश्नवाचक शब्दों का अर्थ सम्बन्ध वाचक शब्दों का सा होता है उनमें प्रश्न चिन्हों को नही लगाया जाता। जैसे–

i) आप ने क्या कहा, सो मैंने नहीं सुना।

ii) वह नहीं जानता कि मैं क्या चाहता हूँ।

6. स्मियादि बोधक चिन्ह अर्थात् Sign of Exclamation (!)

• यह चिन्ह आश्चर्य, हर्ष, विस्मय आदि के भाव प्रकट होने पर प्रयोग किया जाता है। जैसे–

i) आह ! कितना मनोरम दृश्य है।

ii) क्यो रे ! तू आखों से अन्धा है।

7. उद्धरण चिन्ह अर्थात् Inverted Comma (“”)

क) जहाँ किसी पुस्तक का कोई वाक्य या अवतरण ज्यों–का–त्यों उद्धरित किया जाये वहाँ इस चिन्ह का प्रयोग किया जाता है। जैसे–

"इसका सारा शरीर ऐसा लचकता है जैसे अंग्रेजी कानून"

ख) पुस्तक, समाचार–पत्र, लेखक अथवा कवि का उपनाम, लेख का शीर्षक आदि उद्धरित करते समय भी इकहरे उद्धरण चिन्ह का प्रयोग होता है। जैसे–

i) 'मधुशाला' के रचयिता 'बच्चन जी' हैं।

ii) 'राष्ट्रीय सहारा' उर्दू में निकलता है।

ग) उद्धरण के अन्तर्गत कोई दूसरा उद्धरण हो तो इकहरे उद्धरण चिन्ह का प्रयोग किया जाता है। जैसे–

उसने कहा "मैंने उसे यह कहते सुना था 'घर को आग लगा दो'।"

8. कोष्ठक चिन्ह [], {}, ()

वाक्य में प्रयुक्त किसी पद विशेष को भली–भांति स्पष्ट करने के लिये कोष्ठकों का प्रयोग होता है। जैसे–

(क) प्रधान मंत्री (श्रीमती इन्दिरा गांधी) एक आदर्श नेता थीं।

(ख) बापू (महात्मा गांधी) सत्य और अहिंसा के पुजारी थे।

9. विवरण चिन्ह अर्थात् (:–)

किसी पद की व्याखा करने या किसी के बारे में विस्तार से कुछ कहने के लिये जिस चिन्ह का प्रयोग किया जाता है वह विवरण चिन्ह कहलाता है। जैसे–

"मैंने गंगादीन से बात की, विवरण निम्न प्रकार है :–"

उपरोक्त नौ चिन्हों के अतिरिक्त निम्न चिन्हों का भी भाषा रचना में प्रयोग किया जाता है :–

(क) अपूर्णता सूचक (xxx) :–

किसी लेख में जब अनावश्यक अंश छोड़ दिया जाता है तब उसके स्थान पर इस चिन्ह का प्रयोग किया जाता है।

(ख) हंस पद (^) :–

जब लिखते समय किसी वाक्य में कोई शब्द भूलवश छूट जाता है तो बाद में उस शब्द को उसी पंक्ति में नीचे की ओर उचित स्थान पर यह चिन्ह बनाकर शब्द को पंक्ति के ऊपर लिख दिया जाता है। जैसे–

ऊपर

शब्द को पंक्ति के ^ ऊपर लिख दिया जाता है।

(ग) संक्षेप चिन्ह (0) :–

इस चिन्ह का प्रयोग किसी शब्द को संक्षिप्त रुप के साथ किया जाता है जैसे डा0 (डाक्टर के लिये), पं0 (पंण्डित के लिये)

(घ) तुल्ना चिन्ह (=) :–

शब्दार्थ अथवा गणित की तुल्यता सूचित करने के लिये इसका प्रयोग किया जाता है। जैसे–

सुअवसर = अच्छा अवसर

एक और एक = दो

(ड.) अपूर्णता सूचक (---) :–

इस चिन्ह का प्रयोग सिकी पारुप अर्थात् फ़ार्म या परीक्षा के प्रश्नों में रिक्त स्थानों के भरने के लिये किया जाता है। जैसे–

आगरा------ के लिये प्रसिद्ध है (ताजमहल / लालकिला)

यदि इन सभी विराम चिन्हों को लेख में यथास्थान प्रयोग किया जाये तो लेख पर की गई मेहनत को सार्थक किया जा सकता है अन्यथा आप बहुधा लेख रद्दी की टोकरी के लिये लिखे ही जाते हैं।

लेखन की प्रारम्भिक समस्या

अधिकांश लोगों के साथ लिखने की समस्या होती है ये लोग कागज और कलम लेकर बैठ जाते हैं और सोचना शरु कर देते हैं कि लिखना कैसे शरु किया जाये, एक अंग्रेज प्रोफेसर का कहना है "Begin at the beginning of what you have to say, go on until you have finished, and then stop." आप जो बात कहना चाहते हैं वही लिखना शुरु कर दें और उस

समय तक लिखते रहें जब तक आपकी बात समाप्त न हो जाये और जब बात समाप्त हो जाये तो लिखना बन्द कर दें, इस प्रकार आप का लेख पूरा हो गया।

यदि आप को कोई पत्र प्राप्त हुआ और उस पत्र के जवाब में आप को पत्र लिखना है तो आप उन प्रश्नों के उत्तर लिख डालें जो प्रश्न आप के पत्र में उठाये गये हैं। इस प्रकार आप का पत्र पूरा हो जायेगा, यदि आप को अपने मित्रों, अपने सम्बन्धियों को पत्र लिखने में किसी प्रकार की हिचकिचाहट नहीं होती तो निःसन्देह आप लेखक बन गये अब आप किसी भी विषय पर कोई निबन्ध, कोई लेख लिखने का प्रयास कर सकते हैं।

लिखने का जितना ही अभ्यास किया जायेगा उतनी ही उसमें परिपक्वता आयेगी, जिस प्रकार का लेख आप लिखना चाहते हैं उसके विषयवस्तु से सम्बन्धित पुस्तकों का अध्ययन आप में आत्म–विश्वास पैदा करेगा।

सुर्ती अर्थात् खैनी खाने के शौकीन सुर्ती के लिये एक कहावत कहते है "अस्सी चुटकी नौव्वे ताल तब देखौ सुर्ती का कमाल" तात्पर्य यह है कि खैनी को जितनी बार चुटकी से मसला जायेगा जितनी बार हथेली पर थपथपाया जायेगा उतनी ही वह स्वादिष्ट होगी। लेखन शैली भी कुछ इसी तरह है अभ्यास करो, लेखक बनो।

हम ने अपने रिश्तेदार को बीच में ही रोकते हुये कहा भाई साहब अब चलिये सोते हैं रात काफी हो गई है अभी मेरी बात पूरी भी नहीं हुई थी कि अजान की आवाज ने चौका दिया, अरे भाई साहब सुबह हो गई है। अब सो जाइये, वह बोले तुम भी कमाल करते हो अब कैसा सोना, चलो नमाज पढ़ कर आते हैं फिर एक प्याला चाय पीकर सोते हैं। बातों–बातों में रात तो गुजर गई लेकिन पता नहीं इससे तुम्हे कितना फायदा हुआ।

अरे भाई साहब मैं आपका किस जबान से शुक्रिया अदा करूँ कि आपने इतनी महत्वपूर्ण बातें बताईं अब मुझे पूरी उम्मीद है कि मैं कुछ लिखने के लायक बन सकूँगा, मेरी पहली कोशिश यही होगी आप से हुई बात–चीत को ही लिख डालूँ।

मेरे रिश्तेदार उठते हुये बोले अच्छा अब उठो वरना जमात छूट जायेगी तुम्हे मेरी जरूरत जब भी महसूस हो फोन कर देना, अगर चिट्ठी लिखना होगा तो टाइप करके भेजना।

बेगम को जगाकर हम दोनों मस्जिद के लिये रवाना हो गये।

सन्दर्भित पुस्तकें–

1- Write better speak better
2- English Grammer & Composition by Wren & Martin
3- होलीपेथ हिन्दी व्याकरण तथा रचना द्वारा कृष्ण कुमार
4- हिन्दी का सामान्य ज्ञान द्वारा हरदेव बोहरा

❑❑

प्यारे नबी की प्यारी .....

आप जानते हैं, क्या है? हजरत अबू बक्र (र0)ने कहा क्या है? वह बोला मैंने जाहिलिय्यत में एक आदमी के लिए फाल निकाली थी। और मैं फाल निकालना तो जानता न था सिर्फ धोका दिया था। अब वह मुझे मिला और यही दिया जो आप खा रहे है। हजरत अबू बक्र (र0) ने जो कुछ खाया था हाथ डालकर सब कै कर डाली।

(तिर्मिजी)

हजरत उमर (र0) की इहतियात और बारीक–बीनी

हजरत नाफिअ (र0) से रिवायत है कि उमर (र0) बिन खत्ताब ने मुहाजिरीनें अव्वलीन के लिए चार–चार हजार मुकर्रर किये, और अपने बेटे के लिए तीन हजार पाँच सौ। लोगों ने कहा कि यह भी तो मुहाजिर हैं। आपने इनके लिए क्यों कम मुकर्रर किया। हजरत उमर (र0) ने कहा, इनको तो इनके बाप ने हिजरत कराई; यह उनके बराबर किस तरह हो सकते हैं जिन्होंने खुद हिजरत की।

(बुखारी)

गुनाह के डर से मुबाह को छोड़ देना

हजरत अतयः (र0) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया, बन्दः उस वक्त तक मुत्तकी के दर्जे को नहीं पहुँच सकता जब तक कि गुनाह से बचने की खातिर मुबाह को न छोड़े।

(तिर्मिजी)

❑❑

समय का पालन कीजिये

-अबू फैसल नदवी

अनुवाद - अन्जुम सालेहा

समय किसी का इन्तिजार नहीं करता। घड़ी की सूइयां कभी नहीं रूकतीं जो समय से लाभ उठा लेता है समय उसके काम आ जाता है और जो समय की कद्र नहीं करता समय उसे कोसों दूर छोड़ कर आगे निकल जाता है। समय एक महान दौलत है, जो इस दौलत की कद्र करता है वही व्यक्ति संसार में सम्मान और प्रतिष्ठा प्राप्त कर सकता है। हर काम अपने वक्त पर करना चाहिये आज का काम कल पर न टालना चाहिये इसी को समय पालन कहते हैं। जो लोग समय की कद्र नहीं करते वह वास्तव में एक कीमती खजाना बर्बाद कर देते हैं बीता समय कभी किसी समय पर वापस नहीं आ सकता। समय के साथ अगर हम मेहनत करें तो अपनी आर्थिक स्थिति ठीक कर सकते हैं। हम किसी के मुहताज नहीं होंगे। सृष्टि की व्यवस्था हमें समय पालन का पाठ पढ़ाती है। हर मौसम अपने समय पर बदलता है। दिन रात अपने समयानुसार होते हैं। चाँद और सूरज अपने निर्धारित समय से निकलते और डूबते हैं। यह अपने कार्यक्रम में कभी भी अव्यवस्था नहीं आने देते। मनुष्य जो कि संसार का सबसे उच्च प्राणी है उस के अधीन बहुत चीजें हैं यदि वह समय का पालन न करे तो यह उसकी ना समझी है। विद्यार्थी अगर समय पर स्कूल न जाये तो विद्या हासिल नहीं कर सकता। किसान अगर समय पर न बोये, समय पर पानी न दे और समय पर न काटे तो कुछ भी हासिल नहीं कर सकता।

इसी प्रकार कारखानों का मालिक समय पर कार्य न करवाये और मजदूर समय पर कार्य न करे तो उसे कुछ भी हासिल न होगा। दुनिया में कामयाब जिन्दगी गुजारने के लिये ये निहायत जरूरी है कि समय का पालन किया जाये। इसे एक पल के लिये भी बर्बाद नहीं करना चाहिये। कहते हें एक मिनट का भूला हुआ कोसों दूर रह जाता है और ये सही है जो लोग अपने निर्धारित समय पर काम नहीं करते दौलत उनसे रूठ जाती है। इज्जत उनसे मुँह मोड़ लेती है और सारी उम्र नाकाम जिन्दगी गुजारते हैं।

समय को बर्बाद नहीं करना चाहिये जो काम समय पर हो वही बेहतर है अगर इसे दूसरे समय के लिये छोड़ दिया जाये तो अधिक कठिनाई होगी। समय का सही पालन करने का तरीका यह है कि हर काम समय पर कर लिया जाए।

कभी–कभी किसी काम को समय पर न करने से बड़े–बड़े नुक्सान उठाने पड़ते हैं। ऐतिहासिक सत्य है कि समय का पालन न करने से ऐसे नुकसान हो जाते हैं जिनकी भर पाई जिन्दगी भर नहीं हो सकती एक बेगुनाह को फांसी इस लिये दे दी गयी कि पत्र वाहक जो उसकी रिहाई का आदेश ले कर जा रहा था केवल पाँच मिनट देर से पहुँचा। इसी तरह नेपोलियन का एक जनरल रणभूमि में देर से पहुँचा और पराजित हुआ। जो लोग समय का पालन नहीं करते हमेशा परेशानी में रहते हैं। जो लोग समय का ध्यान नहीं रखते बहुत खसारे में रहते हैं समय पालन से इन्सान खुशगवार जिन्दगी गुजारता है। इसकी बहुत सी परेशानियां अपने आप दूर हो जाती है। समय का पालन हर काम में जरूरी है। दुनिया का कोई भी व्यक्ति किसी भी पेशे से जुड़ा हो जब तक समय का पालन नहीं करेगा उसे कभी भी कामयाबी नहीं मिलेगी।

शेष पृष्ठ 31

ज़रूरीयाते दीन आप कैसे पढ़ाए

डा0 हारून रशीद

सिल्सिले के लिये अप्रैल का अंक देखें।

दीनियात में हमने कुर्आन शरीफ नाजिरा (देख कर पढ़ना) को अव्वलीयत (प्राथमिकता) दी, इस सिल्सिले में हमने हुरूफ शिनासी (अक्षर परिचय) में अपने तजरिबात पेश किये तरीक–ए–तअलीम (पाठन विधि) का अधिकांश सम्बन्ध व्योहारिक (अमली) होता है जो कर के दिखाया जाता है फिर भी कुछ मौलिक बातें लिखकर बताई जा सकती हैं।

ज़बर ज़ेर के ढंग पर पेश समझाएं – जब बच्चा हुरुफ पहचानने लगे और ज़बर, जेर, पेश के अमल को समझने लगे तो बच्चे को तन्वीन (दो ज़बर, दो ज़ेर और दो पेश की तख़्ती पढ़ाई जाए इस सिल्सिले में पुराने बग़दादी काअ़िदे की इफादीयत (उपयोगिता) से इन्कार नहीं किया जा सकता। फिर हुरुफ की मिलावटों और उन के मुखतलिफ (विभिन्न) शोशों की पहचान के लिये नूरानी क़ाअ़िदा बहुत बेहतर रहेगा और भी कोई अच्छा काअिदा उस्ताद इन्तिखाब कर सकता है लेकिन कोशिश यह होनी चाहिये कि सबक इज्तिमाई (सामोहिक) हो, बोर्ड का प्रयोग हो, जब बच्चा अल्फाज़ (शब्द) पढ़ने लगे तो, सूर–ए–फातिहा पढ़ाएं फिर तीस्वें पारे की आख़िर की सूरत से पढ़ाना आरंभ करें, बच्चों के लिये तीस्वां पारा इसी प्रकार छपा हुआ मिलता है।

पारे का सबक आम तौर से इन्फिरादी (प्रथक, प्रथक) पढ़ाने और सुनने का रिवाज है लेकिन मेरा अपना तजरिबा है और कुछ दूसरे उस्तादों को देखा है, यह कि शुरूअ में दस पांच छोटी सूरतें बोर्ड पर लिख कर इज्तिमाई तौर पर पढ़ाएं अलबत्ता सबक सुनें इन्फिरादी ताकि गलत याद कर लेने और गलत पढ़ने का अन्देशा न रहे।

जब बच्चा चन्द सूरतें देख और पहचान कर पढ़ लेगा बस अब पढ़ाना आसान हो जाए गा। रोजाना मुतअय्यन (नियुक्त) सबक उस्ताद जियादा से जियादा दस बच्चों को एक साथ अच्छी आवाज़ से कम से कम दो बार पढ़ाए, फिर बच्चे सबक़ याद करें और बच्चा इन्फिरादी तौर पर सुनाए अगर जियादा बच्चे गलतियां कर रहे हो तो वही सबक दुहराया जाए आंगे न बढ़ाएं, कुछ बच्चे गलत पढ़ें तो उन से याद करवा कर इतनी बार सुना जाए कि वह सहीह पढ़ें। यह कुर्आन शरीफ का एअजाज (चमत्कार) है कि बच्चों की जबान उस पर चलने लगती है और बच्चा बे समझे देख कर और जबानी आसानी से कुर्आन मजीद पढ़ने लगता है।

प्राइमरी दरजात में कुर्आन शरीफ खत्म कराने का एहतिमाम (व्यवस्था) होना चाहिये, कुछ बच्चे ऐसे भी हो सकते हैं कि जो तीसरे, चौथे दर्जे में प्रवेश लेने के कारण कुर्आन में पीछे रह जाएं, हेड मुदर्रिस को चाहिये के बच्चे के गारजियन से अहद ले कि बच्चे को कुर्आन शरीफ पूरा कराने का टिवशन से इन्तिजाम करेगा वरना बच्चे को वही दर्जा देना चाहिये जहां से उस का कुर्आन शरीफ पूरा हो सके।

बच्चों को नाजिरा के साथ बहुत सी सूरतें जबानी भी याद कराना चाहिये, यह भी कुर्आन का एअजाज (चमत्कार) है कि इस की सूरतें बे समझे बड़ी आसानी से सहीह तलफ़्फुज़ (शुद्ध उच्चारण) के साथ याद हो जाती हैं। दीनियात में नमाज़ की बड़ी अहम्मीयत (महत्व) है और नमाज कुर्आने मजीद की कुछ सूरतें ज़बानी याद किये बिना पढ़ी नहीं जा सकती।

छोटे बच्चों को जो अभी उर्दू, हिन्दीं या कोई जबान पढ़ना नहीं आती दीनियात की बातें जबानी पढ़ाना चाहिये सबसे पहले कल्म–ए–तय्यिबा ला इलाह इल्लल्लाहु मुहम्मदुर्रसूलुल्लाहि जबानी मअ़ना के साथ याद कराएं, फिर सूर–ए–फातिहा सूरतुन्नास, सूरतुल फ़लक़, सूरतुल–इख़्लास जबानी याद कराएं, जबानी याद कराने का अच्छा तरीका यह है कि दस बच्चों के ग्रूप को सामने बिठा कर उस्ताद अच्छी आवाज से कल्मा पढ़े और बच्चे दुहराएं कुछ बच्चे बहुत जल्द याद कर लेंगे कुछ को

देर लगेगी, जो बच्चे साफ व सहीह पढ़ने लगें उन में से बारी बारी से उस्ताद बच्चों को पढ़वाए और खुद दूसरे दस के ग्रूप पर लग जाए।

इसी तरह नमाज में पढ़ी जानी वाली चीजें, रुकूअ, कौमा, सज्दों की तस्बीहात याद कराएं, फिर अत्तहीयात, दुरूद शरीफ, व दुआए कुनूत वगैरह याद कराना चाहिये लेकिन आखिर की तीनों चीजें दूसरे दर्जे में याद कराई जाए जब बच्चे सूरतें पढ़ने लगें। पहले दर्जे में बच्चों को कुछ मअमुल की दुआएं याद कराएं, तजरिबे कारों ने दीनियात का कोर्स प्राइमरी दरजात पर तक्सीम कर रखा है इस से फाइदा उठाएं यहां तो कैसे पढ़ाएं पर कुछ बातें पेश हो रही है, क्या पढ़ाएं के लिये कोई निसाब देखें।

छोटे बच्चों को अजान के कलिमात भी जबानी याद कराएं, नमाज के औकात फज्र, जुहर, अस्र, मगरिब, इशा जबानी याद कराएं और जबानी उन के जेहनों में बिठाएं कि यह औकात कब आते हैं।

बच्चों को वुजू करना अमल से सिखाए उस्ताद खड़ा हो कर हिदायत दे। बिस्मिल्लाह पढ़ो, गट्टो तक हाथ धोओ। कुल्ली करो तीन बार। नाक में पानी उालो। बाएं हाथ से नाक साफ करो। तीन बार पूरा मुंह धोओ। पहले दायां फिर बायां तीन तीन बार दोनों हाथ धोओ। सर का मसह करो। दाहना पैर टखनों समेत तीन बार धोओ। बायां पैर तीन बार टखनों समेत धोओं। वजू हो गया। उस्ताद खुद वजू कर के दिखाए फिर बच्चों से ऊपर के मुताबिक वजू कराए और बताए कि वुजू के बगैर नमाज नहीं पढ़ सकते हो।

दूसरे तीसरे दरजात के बच्चों को सूर–ए–फातिहा, अत्तहीयात, दुरूद शरीफ, दुआए कुनूत और नमाज़ के जुम्ला अज्कार के मअना जरूर याद कराना चाहिये दीनियात के सिल्सिले में जनाब मुफ्ती किफायतुल्लाहु साहिब के तअलीमुल इस्लाम के हिस्से, इब्दिाई दरजात के लिये नूरुल ईमान, इस्लाम की तअलीम फिर तअलीमुल इस्लाम पांचवे दर्जे के लिये, इसी तरह हकीम शराफत साहब की अच्छी बातें और सीरत की किताबें, जमईयतुल उलमा के दीनियात के रिसाले वगैरह बहुत अच्छे है, इन किताबों के इन्तिखाब से जिन हजरात ने दीनी निसाब तय्यार किया हो उन्हीं की तर्तीब से पढ़ाना चाहिये। दीनी तअलीमी कौन्सिल का प्राइमरी निसाब, जामिआ सय्यिद अहमद शहीद का प्राइमरी निसाब, जमाअते इस्लामी हिन्द का प्राइमरी निसाब जो पसन्द आए पढ़ाएं। हम तो अपने तजरिबे का नदवतुल उलमा का प्राइमरी निसाब पढ़ाने की दअवत देते हैं। जो सद फीसद कामयाब है और कई सौ प्राइमरी दरजात में पढ़ाया जाता है। इस का दीनियात का निसाब बहुत ही अच्छा है।

हमारे डाक्टर सलामतुल्लाह साहब ने दीनियात कैसे पढ़ाएं में जो कुछ गुरेज इख्तियार किया है वह गालिबन बरेलवी हजरात के निसाब को देख कर किया है। इस को क्या किया जाए कि उन के निसाब में तामीरे अदब, और नूरानी तालीम में ईमाने मुफस्सल व ईमाने मुजमल और अरकाने इस्लाम की तालीम के बजाए सुन्नी वहाबी के मन गढत इखतिलाफात की तालीम की अहम्मीयत दी गई है। वह जानें उनका काम जाने जैसे चाहें उम्मत के बच्चों को तय्यार करें, हम को तो अपने बच्चों को कुर्आन व हदीस की सहीह तअलीम देना है और हर हर बच्चे को अल्लाह और उस के रसूल पर सहीह ईमान रखने वाला अल्लाह व रसूल से सच्ची मुहब्बत रखने वाला अल्लाह व रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की इताइत करने वाला, उम्मत में इत्तिहाद व इत्तिफाक पैदा करने वाला बनाना है अल्लाह हमारी मदद करे।

हां यह बात अपनों से भी कहना है और बरेलवी असातिज़ा से भी (कि मैं तो उन को अपना ही समझता हूँ) कि दीनियात में जो कुछ पढ़ाए वुजू, नमाज़ अखलाक वगैरह उस पर अमल जरूर कराएं। हमारा बच्चा तो जिसे मुसलमान समझे गा सलाम जरूर करेगा अलबत्ता बरेली स्कूल का बच्चा बल्कि बड़ा भी सोचे गा कि इस मुसलमान सूरत को सलाम करें कहीं यह वाहबी न हो या उस के सलाम का जवाब दें कहीं यह देव बन्दी न हो। अल्लाह तआला हम को भी और हमारे बरेलवी भाइयो को भी अपनी पसन्दीदा राह पर चलने की तौफीक से नवाजे आमीन!

❑❑

शहीदे अक्सा

शैख अहमद यासीन

नजमुस्साकिब अब्बासी गाजीपुरी

मस्जिद से फ़ज्र की नमाज़ अदा करने के बाद एक बूढ़ा व्यक्ति अपने सहयोगियों के सहारे ही चेयर पर बैठकर वापस आ रहा था कि अचानक मिज़ाइलों और हेलीकॉप्टर की दिल दहलाने वाली आवाज़ चहुं ओर गुँज उठी और क्षण भर में हर तरफ विभीषण दृश्य दिखाई देने लगा और वह बूढ़ा व्यक्ति उस लाल धरती पर अपने जांनिसार कमान्डरों के साथ जामे शहादत पीकर इसराइली कायरता को मुँह चिढ़ाने लगा। वह बूढ़ा व्यक्ति शहीदे अक्सा शेख अहमद यासीन था जो सुल्तान सलाहुद्दीन अय्यूबी का वास्तविक उत्तराधिकारी था।

शैख अमहद यासीन का जन्म 1938 में गजह शहर से बीस किलो मिटर दूर मजदल जिले के गाँव जौरह में हुवा। ढ़ाई साल की आयु में बाप का साया सर से उठ गया मगर माँ की शीतल छाँव में परवान चढे। भाइयों में आप तीसरे नम्बर पर थे। शुरू में शैख का खानदान गाँव में ही रहता था लेकिन 1948 के बाद गज़ह शहर में बस गया जहाँ शैख ने अपनी उम्र के पच्चीस साल गुजारे। शैख ने प्रारम्भिक शिक्षा अपने गाँव के ही मदरसा इमाम शाफई में प्राप्त की, फिर मदरसा एदादिया और मदरसा फिलिस्तीनुस्सानीयह में पढ़ाई की, मगर यहाँ आपकी शैक्षिक यात्रा पर ब्रैक लग गया, हालाँकि बाद में अपने काहिरा विश्वविद्यालय में प्रवेश लिया लेकिन बिमारी और आर्थिक कारणों से पढ़ाई जारी न रख सके।

शैख अहमद यासीन के जीवन में ऐतहासिक बदलाव तब आया जब वह "इख्वानुल मुसलेमीन में शामिल हुवे। उस समय इस संगठन के अन्तर्गत छेडे गये इस्लामी आंदोलन मिस्र में बहुत अधिक सफल थे जो केवल मिस्र ही नहीं बल्कि दूसरे देशों में अपनी जड़े जमा रहे थे। फिलिस्तीनी युवक इस संगठन से जुड़ने लगे। इसी दौरान शैख एक जुझारू कार्यकर्ता के रूप में जुड़कर फिलिस्तीनी जनता की दशा व दिशा बदलने का प्रयास करने लगे। इस संगठन की विशेषता ये थी कि वह धार्मिक व्यवहारिक शिक्षा के साथ–साथ शारिरिक व्यायाम पर अत्यधिक जोर देता था।

बचपन में अपने दोस्तों के साथ समुद्र के किनारे ऊँची चट्टान से सर के बल गिर पड़े जिसके कारण गर्दन की हड्डिया अपनी जगह से दूसरी जगह घुस गई। इस गंभीर चोट से रीड़ की हड्डी भी प्रभावित हुई। प्राथमिक उपचार के बाद अस्पताल में भर्ती कराया गया जहाँ उपचार के दौरान ही समस्त शरीर पर फालिज का गंभीर प्रभाव पड़ा। इस फ़ालिज ने उनको दोनो पैरों से मजबूर कर दिया लेकिन हिम्मत न हारी और इस घटना के कुछ दिनों बाद ही सरकारी नौकरी ज्वाइन कर ली और कई साल तक उससे जुड़े रहे।

अरब–इसराईल युद्ध में अरबों की पराजय से अरब जगत में मायूसी का माहौल बन चुका था। आत्महीनता की चादर लगभग हर कोई ओढ़ने लगा था कि अचानक लोगों को शेख अहमद यासीन के व्यक्तितव में आशा की किरण दिखाई देने लगी। अल्लाह ने लोगों की आशाओं को विश्वास में बदलने के लिये शैख को तैयार किया। एक सम्बोधन में शैख ने कहा कि "हमें किसी भी हाल में उम्मीद का दामन नहीं छोड़ना चाहिये, अल्लाह से सहायता मांगनी चाहिये क्यों कि उसके अतिरिक्त कोई भी मददगार नहीं है। जीवन में उतार–चढ़ाव आते ही रहते है, इसका तात्पर्य ये नहीं है कि हिम्मत हार कर हाथ रख कर बैठ जाएं बल्कि स्वयं के बारे में चिन्तन किया जाए और अपनी योग्यता और शक्ति का आंकलन किया जाए क्योंकि शत्रु

के पंजे से पवित्र धरती को स्वतंत्र कराना ही हमारा मक़सद है।"

शहीदे अक्सा के संघर्ष का केन्द्र शूरू से ही मस्जिदे रही है। आप नव युवकों, बड़ों, बच्चों और औरतों के अन्दर इस्लामी रूझान पैदा करने के लिये सम्बोधित किया करते थे। लोगों से अलग–अलग मुलाकात करते थे। युवा टोलियों से मिलते और उन्हें बाऊँड्री के पास ले जाकर कंटीले तारो से घिरी वतन की मिट्टी दिखाते और उसे स्वतंत्र कराने के लिये ललकारते। इसी लिये आपने अत्याचारियों से पवित्र धरती को स्वतंत्र कराने के लिये विभिन्न फंडों की व्यवस्था की थी। इसी प्रकार आपके महान कार्यों में से एक इस्लामी एकेडमी की स्थापना थी जो फिलिस्तीनी युवाओं के लिये सौगात थी। आपने स्थानीय युवाओं को अरब देशों के प्रसिद्ध विश्वविद्यालयों में एकेडमी के अन्तर्गत पढ़ने के लिये भेजा। वही युवा बाद में गजह युनिवर्सिटी की स्थापना के आधार बने जिसमें शैख ने महत्वपुर्ण भुमिका निभाई।

आपने फिलिस्तीनी युवाओं की आत्मा को देश पर मर मिटने के लिये झकझोरा, जिससे युवाओं में क्रान्ति की ज्वाला भड़कने लगी। अतः इस ज्वाला से इस्लाम के दुश्मनों को जला डालने के लिये शैख अहमद यासीन रह0 ने हमास की 1987 में आधारशिला रखी और अत्याचारी इजराइलियों के विरूद्ध जंग का आगाज़ किया। प्रारम्भिक चरण में धरनो, प्रदर्शनों से अपनी शक्ति का आभास कराया फिर जनता में फैलती लोकप्रियता के कारण हमास ने हथियार द्वारा सीधा युद्ध छेड़कर इजराइल के नाक में दम करना शुरू किया जो आज तक जारी है और इसका पूरा श्रेय शहीदे अक्सा को जाता है।

आज शैख अहमद यासीन हमारे बीच नहीं है मगर फिलिस्तीनी बल्कि समस्त मुसलमानों के दिलों में आज भी जिन्दा हैं। उनके बताए हुवे रास्तों पर चलकर हमास आज अत्याचारियों की हर कारवाइयों का मुँह तोड़ जवाब दे रहा है और इन्शाअल्लाह वह दिन दूर नहीं जब फिलिस्तीनी समस्त मुसलमानो को वह खुशी देगें जिसकी तमन्ना हम कई दशको से कर रहे हैं।

(लेखक नदवा के छात्र हैं)

❑❑

जल ही जीवन है .....

से घड़ा भरता है। अगर हमारी सोच नकारात्मक रही अथवा हम उदासीन बने रहे तो घड़ा भरना तो दूर रहा उस में एक बूँद भी पानी न रहेगा, और तब हमारा क्या हाल होगा! सोचें, विचार करें और कुछ करें।

पानी पानी कर गई मुझको कलन्दर की यह बात
तू झुका जब गैर के आगे, न तन, तेरा न मन।
अपने मन में डूब कर पा जा सुरागें जिन्दगी,
तू अगर मेरा नहीं बनता, न बन, अपना तो बन।

(इक़बाल)

❑❑

समय का पालन कीजिये...

हमारे ख्याल में एक विद्यार्थी के लिये समय का पालन जितना जरूरी है, शायद किसी और के लिये उतना जरूरी नहीं है क्योंकि यह जमाना इन्सान की जिन्दगी की तामीर का बेहतरीन जमाना है। तालिब इल्मी के जमाने में अगर समय पालन का ध्यान रखा जाये तो इल्म की दौलत से माला माल हो जाये और उसकी यह आदत बाद में अमली जिन्दगी के लिये भी लाभदायक होती है। जहाँ भी वह जाता है कामयाब होता है जो लोग समय के पाबन्द होते हैं उन में सुस्ती और काहिली नाम को नहीं होती वह हर काम समय पर करने के लिये तैयार रहते हैं इस से इनका काम भी समय पर हो जाता है। और इनका स्वास्थ्य भी ठीक रहता है और जिन्दगी कामयाब और खुशहाल गुजारती है अल्लाह ने हमें समय पालन का हुक्म दिया है। नमाज हमें समय पालन का दर्स देती है। रोजह भी समय का पाबन्द बनाता है। समय पर सहरी खाना पड़ती है समय पर इफ़्तार करना पड़ता है। अगर सहरी देर से खाई जाये और इफ्तारी समय से पहले की जाए तो रोजे का सवाब जाता रहता है और सारे दिन की मेहनत बेकार हो जाती है और इन्सान मुफलिस हो जाता है। समय का पालन बहुत जरूरी है। समय की लापरवाही करने से न इज्जत रहती है न दौलत न स्वास्थ्य समय–पालन से हर चीज़ पैदा हो सकती है।

(उर्दू मासिक 'रिजवान' से साभार)

❑❑

भारत का संक्षिप्त इतिहास

मुगल काल

– इदारा

बाबर के अन्तिम दिन – 24 जून, 1529 ई0 को बाबर आगरा लौट गया। अफगानों के दमन के लिये प्रस्थान करने के पूर्व ही बाबर ने अपने पुत्र हुमायूं को काबुल तथा बदख्शां की देखभाल के लिये भेज दिया था। आगरा लौटने पर उसने स्वयं भी काबुल की ओर प्रस्थान कर दिया परन्तु वह केवल लाहौर तक गया था कि अधिक परिश्रम करने के कारण बाबर का स्वास्थ्य बिगड़ गया और वह अस्वस्थ रहने लगा; अतएवं बह वापस लौट आया। इसी समय हुमायूं को सूचना मिली कि प्रधानमन्त्री ख्वाजा निजामुद्दीन खलीफा बाबर के बहनोई मीर मुहम्मद मेंहदी ख्वाजा को हुमायूं के स्थान पर बाबर का उत्तराधिकारी बनाने का षड्यन्त्र रच रहा है; फलतः उसने काबुल से प्रस्थान कर दिया और आगरे चला आया। षड्यन्त्र सफल न हुआ और हुमायूं को सम्भल का शासक बना कर भेज दिया। 1530 ई0 के प्रारम्भ में हुमायूं सम्भल में ही बीमार पड़ गया और उसकी दशा बड़ी ही शोचनीय हो गई। वह तुरन्त आगरे लाया गया परन्तु हकीमों की सभी औषधियां निष्फल सिद्ध हुई। तब ज्योतिषियों ने यह परामर्श दिया कि ऐसे अवसर पर किसी मूल्यवान वस्तु का त्याग करना चाहिये। बाबर ने अपने जीवन से अधिक मूल्यवान कोई दूसरी वस्तु नहीं समझी। उसने अपने पूत्र के पलंग की परिक्रमा की और उसके स्वस्थ हो जाने के लिय भगवान् से प्रार्थना की। कहा जाता है कि उसी दिन से हुमायूं का स्वास्थ सुधरने लगा और बाबर का स्वास्थ्य गिरने लगा। कहा जाता हैं कि अपनी आँखें बन्द करने के पहले बाबर ने हुमायूँ को आदेश दिया कि वह अपने भाइयों के साथ सदैव सदव्यवहार करेगा, चाहे वह उसके साथ दुर्व्यवहार ही क्यों न करें। हुमायूं ने आजन्म अपने पिता की इस आज्ञा का पालन किया। यद्यपि इसके कारण उसे बड़े कष्ट उठाने पड़े। 26 दिसम्बर, 1530 ई0 को बाबर की आंखें सदैव के लिये बन्द हो गई।

बाबर का चरित्र तथा उसके कार्यों का मूल्यांकन– बाबर एक अत्यन्त विलक्षण प्रतिमा का व्यक्ति था। उसमें ऐसे अदभुत गुण विद्यमान थे जो बहुत कम व्यक्तियों में दृष्टिगोचर होते हैं। उसके चरित्र तथा उसके कार्यों का मूल्यांकन निम्नलिखित दृष्टिकोणों से किया जा सकता है :–

(1) व्यक्ति के रूप में– बाबर बड़े ही उदार तथा विशाल हृदय का व्यक्ति था। उसमें उच्चकोटि की दानशीलता, दया तथा सहानुभूति थी। अपने मित्रों तथा साथियों को वह मुक्तहस्त होकर उपहार तथा भेंट दिया करता था। दीन–दुखियों पर वह दया दिखलाता था और उन्हें दान–दक्षिणा दिया करता था। वह बड़ा ही सच्चा साथी तथा उदार मित्र था, उसमें उच्चकोटि का पारिवारिक प्रेम था। अपनी पत्नी में उसकी अपार अनुरक्ति थी और अपनी सन्तान के प्रति उसका प्रगाढ़ स्नेह था। अपने सम्बन्धियों के प्रति वह बड़ा ही उदार तथा कोमल था और उन्हें पुरस्कृत करने में उसे बड़ा ही आनन्द मिलता था।

बाबर बड़ा ही बुद्धिमान तथा प्रतिभावान् व्यक्ति था। वह बड़ा ही शिष्ट तथा सभ्य था और उसमें उच्चकोटि की व्यवहार–कुशलता थी। साहित्य में उसकी बड़ी रुचि थी और लिखने–पढ़ने का उसे बड़ा चाव था। वह फारसी तथा अरबी का उच्चकोटि का विद्वान् था और तुर्की भाषा पर उसे पूर्ण अधिकार था, जिसमें वह बड़ी ही सुन्दर शैली में साहित्यिक रचनाएं कर सकता था। उसकी गद्य–शैली अत्यन्त विलक्षण थी। उसकी

आत्मकथा, जिसे उसने गद्य में लिखा है, संसार के अनुपम ग्रन्थों में से एक है। उसकी दृष्टि बड़ी पैनी थी और मनुष्य की उसको अद्‌भुत परख थी। जिन देशों तथा जातियों को उसने देखा उनका उसने बड़ा सुन्दर तथा सजीव वर्णन किया है। वास्तव में वह बड़ा जिज्ञासु था और जहां कहीं उसकी दृष्टि पड़ती थी उसका वह अध्ययन करता था और बड़ी ही सुन्दर रीति से उसका वर्णन किया करता था। बाबर कवि भी था और फारसी तथा तुर्की में वह सफलतापूर्वक कविताएं कर लेता था। तुर्की के सबसे बड़े कवि मीर अली शेर बेग के बाद बाबर को ही स्थान दिया जाता था। बाबर ने कई पद्य–ग्रन्थ लिखे थे। उसने एक नयी लेखन–शैली को जन्म दिया था जिसे 'खते बाबरी' के नाम से पुकारा गया था। इस प्रकार बाबर की साहित्यिक देन बड़ी अमूल्य थी।

(2) प्रकृति प्रेमी के रूप में– कवि का हृदय प्राप्त होने के कारण बाबर का प्रकृति से विशेष प्रेम था। उसे उपवनों तथा बगीचों के लगाने का बड़ा शौक था और वह भिन्न–भिन्न प्रकार के प्रयोग किया करता था। उपवनों में अत्यन्त अभिरुचि होने के कारण उसे 'उपवनों का राजकुमार' कहा गया है। वह उपवनों के लगाने की केवल नई–नई योजनाएं ही नहीं किया करता था। फूलों से उसका विशेष प्रेम हो जाना स्वाभाविक ही था।

(3) कला–प्रेमी के रूप में– बाबर बड़ा ही कला–प्रेमी था। काव्य–कला के साथ–साथ संगीत–कला में भी उसकी बड़ी रुचि थी। वास्तव में ये दोनों कलाएं एक–दूसरे की सहचरी हैं। चूंकि बाबर को एक कवि का हृदय प्राप्त था; अतएव उसका संगीत–प्रेमी बन जाना स्वाभाविक ही था। वह स्वयं अच्छी तरह गा सकता था परन्तु गाने से अधिक उसकी गानों की रचना करने में रुचि थी।

संगीत के साथ–साथ भवन–निर्माण–कला में भी उसकी बड़ी रुचि थी। वह राजपूताने की सीमा पर ऐसे भवन बनवाना चाहता था जो ठण्डे हों। उसके आदेशों से आगरा, सीकरी, वियाना, धौलपुर, ग्वालियर तथा अन्य नगरों में अनेक भव्य भवनों का निर्माण किया गया था।

(4) सैनिक तथा सेनापति के रूप में– एक कुशल सैनिक तथा सेनापति के रूप में भी बाबर का बड़ा ऊँचा स्थान है। वह बड़ा ही वीर था और उसमें अदभ्य उत्साह तथा साहस था। वह बड़ा ही कुशल तीरन्दाज था। घुड़सवारी में वह बड़ा ही प्रवीण था। परिश्रमशीलता उसमें उच्चकोटि की थी और कठिनाइयों में वह कभी घबड़ाता न था। पराजय से वह कभी हतोत्साहित नहीं होता था और अपने लक्ष्य की पूर्ति में निरंतर संलज रहता था। भयभीत होना उसने सीखा ही न था और सबल से सबल शत्रु का निर्भीकतापूर्वक सामना करने के लिये उद्यत रहता था। सैन्य–संचालन तथा ब्यूह–रचना की उसमें अद्‌भुत प्रतिमा थी। भयानक से भयानक आपत्ति भी उसके हृदय को दहला नहीं पाती थी और अपनी पूरी शक्ति को संगृहीत करके बड़े धैर्य के साथ वह अपने शत्रुओं का सामना करता था। युद्ध में उसकी पैंतरेबाजी बड़ी अद्‌भुत होती थी और शत्रु को अस्त–व्यस्त कर देती थी। रणक्षेत्र में अपने को परिस्थितियों के अनुकूल बना लेने की उसमें अद्‌भुत क्षमता थी। सैनिकों के हतोत्साहित हो जाने पर अपने ओजपूर्ण वक्तव्य द्वारा उनको उत्साहित करने की उसमें विलक्षण प्रतिमा थी। सैन्य–संचालन तथा पैंतरेबाजी के दृष्टिकोण से अफगानिस्तान तथा हिन्दुस्तान में उसकी बराबरी करने वाला कोई दूसरा सेनापति न था। इसी से उसने रण–क्षेत्र में प्रायः विजयलक्ष्मी का ही आलिगन किया था, पराजय का नहीं।

(5) शासक के रूप में– बाबर के सम्बन्ध में प्रायः यह कहा जाता है कि उसमें साहित्य तथा सामारिक प्रतिमा तो थी परन्तु उसमें प्रशासकीय प्रतिमा न थी और वह एक कुशल राजनीतिज्ञ

न था। यद्यपि इस कथन में सत्य का बहुत बड़ा अंश विद्यमान है क्योंकि उसने किसी भी ऐसी संस्था का निर्माण नहीं किया जिस पर उसके अपने व्यक्तित्व की छाप हो और न उसने अफगानिस्तान अथवा हिन्दुस्तान की शासन–व्यवस्था में ही किसी प्रकार का सुधार किया। परन्तु इस बात को कभी न भूलना चाहिये कि इस प्रकार के सुधार के लिये परिस्थितियां अनुकूल न थीं। अफगानिस्तान के लोग रूढ़िवादी थे और उनमें कबाइली भावना इतनी बढ़ी थी कि वे अपनी राजनीति तथा सामाजिक संस्थाओं में क़िसी प्रकार का परिवर्तन सहन करने के लिये उद्यत न थे। उतएवं बाबर के लिये उनमें किसी प्रकार का परिवर्तन करने का दुस्साहस करना खतरे से खाली न था और भयंकर विरोध की संभावना थी। भारत में बाबर ने केवल चार वर्ष तक शासन किया था। इन चार वर्षों में उसे निरन्तर अफगानों तथा राजपूतों के साथ लोहा लेना पड़ा था। भारत में जो भयानक राजनीतिक शान्ति हुई और जो अशान्ति फैली उससे लोग अत्यन्त भयभीत हो गये थे। अतएवं उस समय की सबसे बढ़ी आवश्कता यह थी कि देश में शान्ि तथा सुव्यवस्था स्थापित करके लोगों के हृदय में विश्वास उत्पन्न किया जाये जिससे उनका भय दूर हो। उस समय नई–नई संस्थाओं का संगठन करना उचित न था। अतएवं बाबर ने अपने राज्य में शान्ति तथा सुव्यवस्था स्थापित करने का प्रयत्न किया। आगरा तथा काबुल के बीच की सड़कों को उसने पूर्ण रूप में सुरक्षित बना दिया था अैर प्रत्येक पन्द्रह मील की दूरी पर उसने सरायें बनवा दी थीं। उसने डाक की सुव्यवस्था का भी प्रयत्न किया था। एक शासक के रूप में बाबर की सबसे बड़ी देन यह है कि उसने राज–पद को गौरव तथा सम्मान प्रदान किया। बाबर से लोग न केवल आतंकित रहते थे अपितु एक नेता के रूप में लोग उसका विश्वास करते थे और एक शासक के रूप में लोग उससे प्रेम करते थे। अपने अमीरों के साथ व्यक्तिगत रूप में एवं सामूहिक रूप में किस प्रकार का व्यवहार करना चाहिये इसे वह भली भाँति जानता था। बाबर में उदारता, सहिष्णुता तथा क्षमाशीलता के साथ–साथ कठोरता तथा दृढ़ता भी विद्यमान थी। युद्ध–काल में उसकी कठोरता अत्यन्त भयंकर रूप धारण कर लेती थी परन्तु शान्ति काल में वह अपनी प्रजा का पोवक तथा रक्षक था चाहे वह जिस जाति अथवा धर्म को मानती हो।

(6) धर्मपरायण के रूप में– बाबर में बड़ी उच्चकोटि की धर्मपरायणता थी और वह अपने धर्म का बड़ा पक्का था। मुस्लिम संतों, लेखकों तथा नैयायिकों के प्रतति उसकी बड़ी श्रद्धा थी परन्तु राजनीतिक मामलों में वह इनके प्रभाव से मुक्त था और अपना स्वतन्त्र विचार रखता था। यद्यपि बाबर धर्मपरायण था परन्तु उसमें धार्मिक संकीर्णता न थी वरन् उसका दृष्टिकोण बड़ा ही व्यापक था। यद्यपि वह सुन्नी मुसलमान था परन्तु शिया मुसलमानों के साथ उसने किसी प्रकार का अत्याचार नहीं किया। भारत में यद्यपि वह हिन्दुओं को काफिर कहता था और अफगानों को अविश्वसनीय समझाता था परन्तु उनके साथ भी वह सज्जनता, विनम्रता तथा मैत्री का व्यवहार करता था। यद्यपि अपने सैनिकों को उतेजित तथा प्रोत्साहित करने के लिए राजपूतों के विरुद्ध उसने जो युद्ध किये उन्हें उसने 'जेहाद' के नाम से पुकारा परन्तु युद्ध में उसने युद्ध के सामान्य नियमों का पालन किया थां उसने अपनी हिन्दू प्रजा के साथ न तो किसी प्रकार का अत्याचार किया और न उसके मंदिरों तथा मूर्तियों को तोड़ा।

(7) साम्राज्य–निर्माता के रूप में– एक साम्राज्य–निर्माता के रूप में भी बाबर का बहुत बड़ा स्थान है। उसने अफगानों तथा राजपूतों की शक्ति को छिन्न–भिन्न करके भारत में एक विशाल राज्य की स्थापना की जो अपने चूड़ान्त विकास के काल में महान् गौरव

को प्राप्त हो गया था और यूरोप के रोमन साम्राज्य की प्रतिस्पर्धा कर सकता था। बाबर ने राज्य की सम्पूर्ण शक्ति को अपने मंत्रियों के हाथों में पुंजीभूत नहीं किया वरन् वह सभी काय्र अपने मंत्रियो के परामर्श तथा सहायता से स्वयं करता था। वह अपने मंत्रियों पर पूरा विश्वास रखता था। और उन्हें पूरी कार्यस्वतन्त्रता रहती थी परन्तु उन्हें आपने कार्य को बड़ी ईमानदारी तथा जिम्मेदारी के साथ करना पड़ता था अन्यथा उनके अपदस्य अथवा दण्डित हो जाने की सम्भावना बनी रहती थी। उसे मंत्रियों को सदैव राज्य तथा प्रजा के हित में कार्य करना पड़ता था। इसमें वे असावधानी नहीं कर सकते थे। वह सदैव सतर्क रहताथा कि उसका शासन सुचारु रीति से संचालित हो रहा है। उसका शासन न्याय तथा दया के सिद्धान्त पर आधिारित था जिसका अनुसरण उनके पौत्र अकबर ने भी किया था।

(8) कूटनीतिज्ञ के रूप में– बाबर एक बहुत बड़ा कुटनीतिज्ञक भी था। वह बल का तभी प्रयोग करता था जब कूटनीति से काम नहीं चलता था। भारत के अफगान अमीरों मेंसे अनेक को उसने कूटनीति द्वारा अपनी ओर मिला लिया था और उन्हें जागीरें दे दी थीं। अपने अमीरों को भी वह कूटनीति द्वारा अपने नियन्त्रण में रखता था। यदि बाबर में उच्चकोटि का धैर्य, सहनशीलता और व्यवहारकुशलता न होती तो वह मुगल तथा अफगान अमीरों को संतुष्ट न कर पाता।

(9) बाबर का भारतीय इतिहास पर प्रभाव– बाबर ने भारतीय इतिहास को अत्यधिक प्रभावित किया है। उसका पहला प्रभाव यह पड़ा है कि उसने अफगानों तथा राजपूतों की शक्ति को छिन्न–भिन्न कर उतरी भारत के राजनीतिक नक्शे को बदल दिया। उसका दूसरा प्रभाव यह पड़ा था कि उसने एक बार फिर भारत का पश्चिमी मध्य एशिया के साथ घनिष्ट सम्पर्क स्थापित कर दिया जिसका राजनेतिक, व्यापारिक तथा सांस्कृतिक दृष्टिकोण से बहुत बड़ा महत्व है। परन्तु बाबर को सबसे अधिक प्रभाव सामरिक दृष्टिकोण से है। उसने भारत पर नई–नई रण–पद्धतियों का प्रचार किया। बाबर ने पानीपत तथा खनवा के युद्धों में बड़ी–बड़ी तोपों का प्रयोग कर तोपखाने की उपयोगिता की दिखला दिया। अब भारतीय शासक यह जान गये कि तोपखाने तथा अश्वारोहियों के संयुक्त मोर्चे के सामने बड़ी–बड़ी सेनाओं का ठहरना कठिन है। तोपखने के प्रयोग ने दुर्गो के महत्व को समाप्त कर दिया और इससे सामन्तीय प्रथा को भी बड़ा धक्का लगा। इस प्रकार तोपखाने के प्रयोग का न केवल सामरिक वरन् सामाजिक तथा आर्थिक दृष्टिकोण से भी बहुत बड़ा महत्व है। बाबर की सबसे बड़ी देन धार्मिक सहिष्णुता की नीति तथा सांस्कृतिक गौरव का वीजारोपण है जिसे उसकें पौत्र अकबर ने आगे बढ़ाया।

(10) बाबर की दुर्बलताएं– उपर्युक्त गुणों के साथ–साथ बाबर में कुछ दुर्बलताएं भी थीं। वह मद्य–पान आवश्यकता से अधिक करता था, परन्तु उसका मद्य–पान उसके कार्यों में कोई बाधा न पहुंचता था। उसकी दूसरी दुर्बलता वह थी कि यह कभी–कभी बड़ा क्रूर हो जाता था। परन्तु उसकी क्रूरता प्रायः रणक्षेत्र तक ही सीमित रहती थी। उसकी तीसरी दुर्बलता यह थी कि उसने अन्य मुसलमान आक्रमणकारियों की भांति हिन्दुओं के विरुद्ध 'जेहाद' का नारा लगाया था। परन्तु उसने ऐसा केवल अपने सैनिकों को उत्तेजित तथा प्रोत्साहित करने के लिये किया था। शान्तिकाल में उसने धर्म को राजनीति से सम्मिलित नहीं होने दिया और केवल धर्म के नाम पर उसने अपनी हिन्दू प्रजा के साथ किसी प्रकार का अत्याचार नहीं होने दिया। अतएवं यह दुर्बलताएं बाबर की महानता में बाधक नहीं सिद्ध होती।

पूर्वोक्त दुर्बलताओं के होते हुए भी बाबर की नीति तथा उसके कार्यो का भारतीय इतिहास पर बड़ा गहारा प्रभाव पड़ा।

❑❑

हमारी ज़िम्मेदारी

-मौलाना नज़रुल हफीज़ नदवी

हिन्दुस्तान जैसे देश में जहां मुसलमानों की हैसियत एक सम्प्रदाय (मिल्लत) की है जिस की अपनी स्थाई सभ्यता और कलचर और अपनी विशेष पहचान है, यहां हमारा वजूद (अस्तित्व) बहुसंख्यक और अल्प संख्यक (अकसरीयत और अक़ल्लीयत) दोनों से अलग है। यह पोजीशन हमसे गहरे चिन्तन, बड़ी बुद्धिमानी, वास्तविक्ता पर विचार और कठोर प्रयास की मांग करती है और हम पर बड़ी जिम्मेदारीयां आइद होती हैं। हमारी पहली ओर बुनियादी जिम्मेदारी यह है कि अपने को संभालें, नैतिक (अख़लाक़ी), रूहानी, इल्मी, दीनी चारों रास्तों से अपनी श्रेष्ठता, अपनी विशेषता और अपनी लाभदायकता और जरूरत साबित करें। यह दीन की स्थिरता, निरंतरता और दीन की प्रतिष्ठा व विश्वास के बाक़ी रखने के लिये जरूरी है। इस्लामी इतिहास में सुधारक व विचारक के कार्यों के अध्यन से मालूम होता है कि यह महा पुरुष सहन शीलता, स्वाभिमान, अपने पर यक़ीन और तक़वे की सलाहियत (संयम की योग्यता) का सुबूत देते रहे तथा उन्होंने मिल्लत।(सम्प्रदाय) की सामूहिक कार्यों में निःस्वार्थ का प्रदर्शन, साहस, उच्च दृष्ठकोण, उदारहृदयता और अपने पंथ (हम मस्लक) ही नहीं अपने विरोधियों तक के कमालात और विशेषताओं के स्वीकरण का साहस और सरकारी तंत्र से निर्भयता और दूरी, अपने कर्तव्यों को पूरा करने में तत्पर्ता व प्रयास तथा संयम का जीवन इख़्तियार करके सम्प्रदाय के लिये वास्तविक दर्द व पीड़ा की मिसालें पेश कीं। यही वह विशेषताएं हैं जिन्हों ने इस्लाम के पूरे इतिहास में बुनियादी किरदार अदा किया और सम्प्रदायों और संस्थाओं में ज़िन्दगी की रुह फूंक दी और जिन्दा रहने का अधिकार पैदा कर दिया था। यही विशेषताएं आज भी पूरी मिल्लत को पतन से बचा सकती हैं। मदरसों से शिक्षा प्राप्त लोगों के लिये जरूरी हो गया है कि वह अपने चरित्र व आचरण में भी उच्चतम स्थान रखते हों। निःस्वार्थता और अल्लाह से सम्बन्ध रखने में भी वह श्रेष्ठ हों और उनके ज्ञान व विचार का स्तर भी उच्च हो। वह वर्तमान समस्यों को समझते भी हों और उनके हल की भी क्षमता रखते हों। उनका अध्यन व्यापक (वसीअ) हो और वह वर्तमान युग की भाषा शैली पर पूरा कमांड रखते हों और नये विचार धारा की बुनियादी कठिनाई को भी समझते हों। यह किसी एक सम्प्रदाय के उलमा, किसी संस्थान मदरसे की समस्या नहीं इस मुल्क में दीन और इल्म के भाविष्य और मिल्लत के उन पर भरोसा व विश्वास और शरीअत (इस्लाम के धार्मिक नियमों) से लगाव की समस्या है।

हमारी ज़िम्मेदारी का दूसरा बुनियादी पहलू यह है कि हम इस देश में तनहा वह सम्प्रदाय (मिल्लत) हैं जो अल्लाह तआला का स्पष्ट सन्देश (वाज़ेह : पैगाम) रखता है, आखिरी आसमानी सुरक्षित किताब (कुर्आन) रखता है। नबी की पूरी जिन्दगी (सीरते नबवी) की दौलत उसके पास है जो पूरी इंसानियत के लिये उच्चतम नमूना (आदर्श) है। इस मिल्लत के पास हर युग में किसी डूबते हुए समाज, किसी बुझते हुए चिराग़ को, किसी बरबाद होते हुए देश को और किसी मिटते हुए समाज को बचालेने का पैग़ाम रहा है। इस पैग़ाम ने पहली दूसरी हिजरी और सातवीं आठवीं हिजरी में रुमी व ईरानी व मध्य एशिया

के बीमार समाज को नई जिन्दगी और शक्ति प्रदान की। इसी तरह तेरहवीं सदी ई0 में जंगली और खून खराबा करने वाली चीनी व तुर्की की तातारी क़ौम को एक नया दीन व नयी आस्था (अकीदा) और नया जीवन उद्देश्य रुहानियत, उन्नति प्राप्त सभ्यता व कल्चर परिपूर्ण व व्यापक समाज, नागरिक व प्रबन्ध नियम तथा विभिन्न प्रकार के ज्ञान व साहित्य देकर एक नयी जिन्दगी व ऊर्जा (तवानाई) तथा पथप्रदर्शन की क्षमता और अन्तर्राष्ट्रीय पैमाने को लाभदायकता प्रदान की।

हम इस देश में सबसे बड़े अल्पसंख्यक सम्प्रदाय हैं। यदि हम अपनी विशेष क्षमता का सुबूत दें, बहुसंख्यक सम्प्रदाय से अधिक मेहनत करें, तो अपनी लाभदायकता अपनी निःस्वार्थता का प्रदर्शन करे तो नेतृत्व ही नहीं इस देश की दिशा बदल सकते हैं सत्ता पक्ष को अपनी जरुरत व लाभदायकता स्वीकार करने पर मजबूर कर सकते हैं। इस लिये कि तन्हा हमारे अन्दर ही जिन्दगी की आखिरी सांस बाकी है।

दुन्या के आधिकतर सम्प्रदाय रुहानी व ईमानी हैसियत से और आत्मा की जवाब देही के लिहाज़ से आखिरी नैतिक चेतना (अख़लाकी शुऊर) और अन्तरआत्मा (जमीर) को जिन्दगी व जाग्रति (बेदारी) से वंचित हो चुके हैं।

हमारी हैसियत यह नहीं है कि हम कुछ सुविधाएं चाहें, कुछ नौकरियां चाहें। हम तो इस देश के उद्धार करता हैं। हम इस देश की आखिरी उम्मिद हैं। यहां के बहुसंख्यक (अक्सरीयत) तक अपना पैगाम पहुंचाएं। वह यह अनुभव करें कि यह अपने स्वार्थ और खुदगर्जी का पैग़ाम नहीं। इसके पीछे राजनीतिक या आर्थिक उद्देश्य नहीं। यह वह पैग़ाम है जिसने मरती हुई इंसानियत और दमतोड़ती दुन्या को मरने से बचाया है। इस पैग़ाम का स्रोत और इसका संचालक व दावत देने वाला हमारा वह खुदा है जो सारे संसार का मालिक है और उसके पैगाम को लेकर आने वाले, खुदा के वह अन्तिम रसूल (संदेष्टा) हैं जो सारे संसार के लिये रहमत (करूणा) बनाकर भेजे गये थे।

इस मिल्लत की एक विशेष खूबी यह है कि वह आखिरी उम्मत (अनुयायी समुदाय) है, कुर्आन रखती है और अल्लाह की तरफ़ बुलाने वाली है। इक़बाल के शब्दों में यह संसार के प्रति जवाब देह है।

मुसलमान कौम की यह विशेषता और इस देश का लोकतांत्रिक प्रबन्ध, फिर मुसलमानों की इतनी बड़ी आबादी, यह सारी बातें इसका अवसर प्रदान करती हैं कि हम यहां की कानून व्यवस्था और प्रबन्ध पर प्रभावशाली हों। यहां कानून बनाने में हमारी भागीदारी हो सकती है। फिर इस देश के लोकतांत्रिक होने की वजह से इस देश का नेतृत्व (क्यादत) का स्थान भी हम प्राप्त कर सकते हैं। अगर हम अपने को नैतिक और रुहानी (अध्यात्मिक) तौर पर व जेहनी (बुद्धिमानी) तौर पर भी और अमली तौर पर प्रधान व श्रेष्ठ साबित करदें तो इस देश का नेतृत्व खुद हमारी मांग करेगा। हमारी ज़िम्मेदारी है कि हम इस देश के बासियों को न्याय का पैगाम दें, सदबुद्धि, और इश्वर भय और इंसानियत का पैगाम दें, प्रेम और अच्छे व्यवहार से काम लें। तमाम राजनीतिक पार्टियों की मौजूदगी और कालिजो तथा विश्वविद्यालयों में शिक्षा का जो स्तर इस समय है और उस के जो साधन उपलब्ध हैं उन सबके बावजूद सदाचारी नेतृत्व ईश्वर भय नेतृत्व और इंसान दोस्त नेतृत्व का पद खाली है। हम अपनी हैसियत पहचानें, अपनी पोजीशन जानें। देश के संवैधानिक अधिकार (दस्तूरी हक़) और इस धरती के वजूद में इश्क़ व मुहब्बत के स्वभाव और उसके धार्मिक मिजाज़ से हम लाभ उठाएं। यहां का समाज धर्मविरोधी नहीं है। मुसलमानों के खिलाफ अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर प्रायः और भारत के स्तर पर विशेषतः जो वातवरण (फिज़ा) पैदा कर दिया गया है वह अस्वाभाविक और अत्यकालीन व बनावटी है। इस्लाम दुश्मनी के इस वातावरण ने बहुसंख्यक समुदाय के मन में इस्लाम के बारे में बहुत से प्रश्न

पैदा कर दिये हैं। भौतिक (माद्दी) और नैतिक उथलपुथल ने भी बहुत असंतोष पैदा कर दिया है। स्वयं की तलाश करने वालों की एक भारी संख्या है जो उस हिरण की भांति है जो शिकारी को देख कर आँख मूंद लेता है।

इसलिये प्रेम व व्यवहार, न्याय, आपसी सम्बन्ध व मेलजोल, मानव समाज की बिना शर्त सेवा द्वारा हम बहुसंख्यक के दिलों और दिमागों में जगह प्राप्त कर सकते हैं। हिन्दुस्तान में इस्लाम के शान्दार काम की जमीन यहां की गैर मुस्लिम आबादी ही तो है। बेतअल्लुकी, नफरत और राजनीतिक वाद विवाद की भावनाओं से इस खेती की सींचाई नहीं हो सकती, न सत्ता की कुर्सी तक दौड़ लगाने से, यह सब हमारे रसूल की सारे संसार की रिसालत (ईशदौत्य) और दीने रहमत (धार्मिक वर्दान) की रूह के सरासर विपरीत है। प्रेम, शुभचिन्ता से ही हम दूसरों के दिलों को जीत सकते हैं। इस देश में इस्लाम के प्रचार व प्रसार की राह में हमारे पूर्वजों का प्रयास और कुर्बानीयों की बुनियाद इन्हीं सिद्धान्तों पर थी और आज भी यहाँ इस्लाम के प्रचार व प्रसार की यही नीति सफल और लाभकारी हो सकती है।

महब्बत के शरर से दिल सरापानूर होता है।
ज़रा से बीज से पैदा रियाजे तूर होता है।।

महब्बत ही से पाई है शिफ़ा बीमार कौमों ने।
किया है अपने बख्ते खुफ्ता को बेदार कौमों ने।।

❑❑

सैलानी की डायरी

समाज सुधार

एम0 हसन अंसारी

(1) "न जी0ओ0 न डी0ओ0, दियो लियो"

(स्थान : उत्तर प्रदेश सरकार के विभागाध्यक्ष का प्रधान कार्यालय दिनांक : 24 फरवरी 2009; भुक्त भागी – श्रेणी 'ख' का एक रिटायर्ड अधिकारी उम्र 75 साल; बाल सफेद)

अधिकारी : "बड़े बाबू जी! हार्ट सरजरी से सम्बन्धित मेरे रिइम्बरसमेन्ट के प्रकरण में एक माह पूर्व शासन की मंजूरी (जी0ओ0) हो कर निदेशालय आ चुकी है। मैं आया हूँ कि देर क्यों हो रही है?"

बड़े बाबू : "जब आप लोग नौकरी करते थे तब की बात भूल जायें। समय बदल गया है। कुछ एक अपवाद हो सकते हैं, पर आज का हर कर्मचारी और उसके बाल बच्चे वेतन पर नहीं, उस की ऊपर की ऊपर वाली अमदनी पर निर्भर होते हैं, और उसका सोशल स्टेटस भी उसकी ऊपर वाली आमदनी के अनुसार बनता है। अब जी0ओ0 'दियो और लियो' का चलन है आप तो समझदार हैं, जो कुछ लाये हों इस मेज के नीचे से मुझे दे दें और सम्बन्धित सहायक तथा डिस्पैचर के हाथ भी गरम कर दें। आप को दोबारा नहीं आना पड़ेगा, कोई आधा घंटे रूकना होगा, ट्रेजरी के लिये आदेश लेकर जायें।

मरता क्या न करता, और फिर बुढ़ापा! वह बुढ़ापा जिसे संरक्षण प्रदान करने के लिये भारत सरकार को भी अन्ततः कानून बनाना पड़ा, उस पर अमल भले ही न हो पाये यह और बाते हैं। सरकार तो आप के साथ है।

सैलानी : फिर आपने क्या किया?

पूर्व अधिकारी : "वही किया जो कुछ एक अपवाद के साथ दुनिया कर रही है। अगरचः आत्मा और अन्तःकरण टोक रहे थे, कुछ सेकन्ड तक खासी मेन्टल कान्फलिकट रही। रजोगुण की जीत हुई सतोगुण की हार! उन तीनों के हाथ गरम किये, आध घंटे बाद डिस्पैचर ने लिफ़ाफ़ा दिया। अब कल जाकर ट्रेजरी में बिल लगा दूंगा, वहाँ भी तो कुछ देना होगा, सो कर दूंगा। खैर! काम तो हो गया, पूरे दो साल लगे हैं, और जाने क्या क्या पापड़ बेलने पड़े और किन किन लोगों से कहना पड़ा!!!"

(2) मंगलपुर में अमंगल

8 मार्च 2009; नेशनल हाईवे न0 56 (लखनऊ–जगदीशपुर के बीच) पर भिलवल और हैदरगढ़ के मध्य एक गाँव मंगलपुर स्थित है, इस गाँव के पश्चिम एक नाले पर वर्षों से एक स्पैन का आर0सी0सी0 का पुल बन रहा है, तीन चार बार बना और गिरा, सिर्फ चार पाँच साल के अन्तराल में न पूरा होने की नौबत आई, और न उद्घाटन की!! ऐसा क्यों? क्या हमारे इंजीनीयर्स में ज्ञान और अनुभव की कमी हैं? नहीं कदापि नहीं! भारत के इंजीनीयर्स ने तो दुनिया के कितने देशों में एक से एक पुल बनाये हैं, यह तो कोई पुल भी नहीं। पुलिया है। फिर क्या बात है? यह कहीं हमारे गुनाहों का नतीजा तो नहीं? पाप अपना रंग जरूर दिखाता है, देर सबेर सही!!!

शेष पृष्ठ 7

किस्त 12

हिन्दी लिपि में उर्दू शब्दों का उच्चारण तथा अर्थ

– इदारा

नोट : बिन्दी वाले अक्षरों के उच्चारण स्थान, उर्दू वालों से सीखना आवश्यक है।

शब्द	अर्थ	शब्द	अर्थ	शब्द	अर्थ
जज़ा	प्रतिदान	जश्ने सीमी	रजस अत्सव	जुलूस	जन यात्रा
जर्गः	दल	जश्ने विलादत	जन्म उत्सव	जल्वा	शोभा
जुज़दान	वेष्ठन	जाअल	छल	जली	स्पष्ट
जर्म (इंग)	किटाणू	जअली	अवास्तविक	जलील	प्रतापवान
जिर्म	प्रकाश–शरीर	जुगराफिया	भूगोल	जलीलुलक़द्र	महा महिम
जुर्माना	अर्थदण्ड	जुगराफियायी	भौगोलिक	जमादात	जड़पदार्थ
जज़्र	वर्ग मूल	जफ़ा	अत्याचार	जमाअ़	सहवास
जज़र	समुद्र का उतार	जफ़ाकशी	श्रम	जमाअ़त	संघ
जुज़्वी	आंशक	जगह	स्थान	जमाल	रूप
जज़ीरः	टापू, द्वीप	जिला	कान्ति	जमअ़	बहुबचन
जज़ीरा नुमा	प्रायद्वीप	जुल्लाब	रेचक	जुमिअरात	गुरूवार
जिज्यः	रक्षा कर	जल्लाद	बधक	जुमुअः	शुक्रवार
जसामत	आकार	जलाल	प्रताप	जमअ़ीयत	समूह
जस्त	छलांग	जिलावतन	निर्वासित	जुम्ला	वाक्य
जसद	देह	जिलावतनी	निर्वासन	जमूद	जड़ता
जिस्मानी	शारीरिक	जिल्द	चर्म	जमहूर	लोक
जसीम	हृष्ट पृष्ट	जल्द	तुस्त	जमहूरियत	जन तंत्र
जश्न	उत्सव	जल्सा	बैठक	जमहूरियः	जनतंत्र राज्य
जश्ने आजादी	स्वाधीनता उत्सव	जलक़	हसत मैथुन	जमीअ़	सकल
जश्ने जर्री	स्वर्ण उत्सव	जल्वत	प्रकट	जमील	सुन्दर

पाठक जिस उर्दू शब्द का अर्थ जानना चाहेंगे अर्थ सहित छापा जायेगा।

अंतर्राष्ट्रीय समाचार

– डॉ0 मुइद अशरफ नदवी

सरकार के लोगों ने गिरवाई थी मस्जिद : सुदर्शन

बाबरी मस्जिद विध्वंश से हिन्दूवादी संगठन को अलग करने की जुगत भिड़ाते हुए आरएसएस प्रमुख केसी सुदर्शन ने कहा है कि इसके पीछे सरकार का हाथ था ना कि कारसेवकों का। उन्होंने यह स्पष्ट नहीं किया कि वह उस समय केंद्र में सत्तारूढ़ नरसिंह राव सरकार की बात कर रहे है या सत्तारूढ़ कल्याण सरकार की।

अमरीका में 1.75 लाख करोड़ डालर घाटे का प्रस्ताव

वाशिंगटन। अमेरिकी राष्ट्रपति बराक ओबामा ने इस वर्ष बजट में 1.75 लाख करोड़ डॉलर के घाटे का प्रस्ताव किया है। श्री ओबामा ने कुल 3.6 लाख करोड़ डॉलर के बजट में 1.75 लाख करोड़ डॉलर के घाटे का प्रस्ताव किया है जो कुल बजट का 12.3 प्रतिशत है। द्वितीय विश्व युद्ध के बाद से यह सबसे बड़ा बजट घाटा है। उन्होंने अपने पहले बजट प्रस्ताव में स्वास्थ्य सुविधां उपलब्ध कराने का वादा किया है जिन्होंने अमरीका में स्वास्थ्य सेवाओं में सुधार के लिये अगले दस वर्षों में 634 अरब डालर खर्च करने का प्रस्ताव किया है।

तालिबान के आगे ओबामा भी झुके

न्यूयॉर्क। अमेरिकी राष्ट्रपति बराक ओबामा ने कबूल किया है कि अफगानिस्तान में चल रही लड़ाई में अमेरिका अब भी जीत से कोसों दूर है। ओबामा ने यह संकेत भी दिया है कि अमेरिका कई विकल्पों पर विचार कर रहा है। इसमें एक विकल्प यह भी है कि तालिबान के उदार गुटों को बातचीत कर अपने खेमे में मिला लिया जाए। ओबामा ने माना है कि अफगानिस्तान में तालिबान के उदार गुटों से बात करने के विकल्प पर विचार किया जा रहा है।

ओबामा ने पिछले माह 17 हजार और सैनिक अफगानिस्तान भेजने के आदेश दिये थे। न्यूयॉर्क टाइम्स से ओबामो ने कहा कि इस आदेश का यह मतलब नहीं था कि अफगानिस्तान युद्ध में अमेरिका जीत रहा है। हम वहाँ जीत से काफी दूर हैं। ओबामा ने इसके साथ ही यह भी कहा कि अब वहाँ जीत के बजाए इराक युद्ध के दौरान आजमया गया बातचीत का तरीका अपनाया जा सकता है। इराक युद्ध के दौरान अमेरिका ने उन लड़ाके गुटों से बात की थी जो अलकायदा के दबाव में अमेरिका से लड़ रहे थे। अमेरिका ने इन गुटों को अलकायदा के चंगुल से छुड़ा कर अपने साथ मिला लिया।

सत्ता की कुंजी युवा पीढ़ी के हाथ में

55 फीसदी मतदाता 39 साल से कम उम्र के। प्रदेश में सत्ता की बागड़ोर अब प्रौढ़ों से खिसक कर युवाओं के हाथों में पहुंच गई है। प्रदेश के कुल मतदाताओं में से लगभग 55.16 प्रतिशत मतदाता युवा हैं, जिनकी उम्र 39 साल या इससे कम है। 60 से ऊपर की उम्र के लोगों की संख्या डेढ़ करोड़है,जो कुल मतदाताओं का मात्र 12 फीसदी है। ऐसे में चुनावों में किसी भी दल या प्रत्याशी की जीत का सारा दारोमदार इन युवाओं के वोटों पर रहेगा। यही कारण है कि जहाँ युवा तबका भी लोकसभा चुनावों का बेसब्री से इंतजार कर रहा है। वहीं, सभी राजनीतिक दल युवाओं की जय–जयकार करने में लगे हैं।

चुनाव आयोग द्वारा पहली बार प्रदेश के मतदाताओं के बारे में आयुवार तैयार कराए गए आँकड़े दिलचस्प हैं। प्रदेश 11 करोड़ 62 लाख 41 हजार वोटर ऐसे हैं, जिनकी उम्र 39 साल से कम है। अगर अपने को युवाओं की श्रेणी में गिनने वाले 49 साल या उससे कम उम्र के मतदाताओं की कुल संख्या को जोड़ें तो मतदाता सूची के 75 प्रतिशत हिस्से पर इनका कब्जा हो रहा है। इस तरह प्रदेश के मतदाताओं में से तीन चौथाई मतदाताओं की उम्र 49 साल या उससे कम है। आयोग के आँकड़ों से यह भी पता चलता है कि प्रदेश की कुल जनसंख्या में से केवल 61 प्रतिशत लोग ही मतदाता बनने के पात्र हैं। यह भी स्वीकार किया गया है कि तीन प्रतिशत मतदाताओं के नाम मतदाता सूची में शामिल नहीं किए जा सके हैं।

❑❑